|| श्री गोगोवर्धननाथाय नमः ||

मासिक

कामधेनु कल्याण पत्रिका

जुलाई 2025

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री

के पावन सानिध्य में....

गो गोवर्धन कृपा चातुर्मास आराधना महोत्सव

(10 जुलाई से 06 सितम्बर 2025)

वर्ष: 02 Website:-www.godhampathmeda.org Email :- K.k.p.pathmeda@gmail.com अंक: 04

-:पावन स्थल:-

अभिनव ब्रजमण्डल श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नन्दगांव केसुआ, रेवदर, सिरोही (राज.)

सुरभि उवाच

हे मेरे प्यारे पुत्रों!

आप सभी को मेरा बहुत–बहुत मंगलमय शुभ आशीर्वाद! मेरे पुत्रों आपको ज्ञात ही है कि 1966 के गोरक्षा आंदोलन को शासन द्वारा कुचल कर विफल करने के बाद गोरक्षा गोसेवा के क्षेत्र में एक बार लम्बे समय तक शून्यता आ गई थी।

हे मेरे पुत्रों! मेरी ही इच्छा और आज्ञा से संतों द्वारा 1993 में आनन्दवन पथमेड़ा की पावन भूमि से एक बार फिर नये सिरे से अघोषित राष्ट्रव्यापी रचनात्मक गोसेवा महाभियान का सूत्रपात किया। इसका उद्देश्य सम्पूर्ण भारतवर्ष में लोग जो गो की महिमा और महत्ता को भूल गए थे उसका स्मरण करवाकर मेरे वंश को पुनः जन–जन के मन मस्तिष्क और हृदय में यथोचित सम्मान सहित स्थापित करना और सम्पूर्ण भारतवर्ष से गोहत्या के कलंक को मिटाना है।

हे मेरे प्रिय पुत्रों! मेरे इस महत्ती कार्य को करने के लिये मैंने ही आप लोगों को इस धरती पर जितने सेवा कार्य हैं उनमें से सबसे महत्वपूर्ण सेवा कार्य में योग्य समझकर नियोजित किया है। मुझे बहुत प्रसन्नता है कि पिछले 30 वर्षों से आप सभी मेरे प्रिय पुत्रों ने संतों के मार्गदर्शन में अपना तन, मन, धन समर्पित कर भारतवर्ष में गोसेवा, गोरक्षा, गोचिकित्सा, गोसंवर्धन और पंचगव्य के विनियोग में एक अभूतपूर्व कार्य किया है। अभी हिम्मत और आशा बनाए रखना, हमारा लक्ष्य संपूर्ण भारतवर्ष में गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगवाना है, पंचगव्य को घर घर पहुंचाना है और इसके सेवन से मानव के आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक व्याधियों को मिटाना है तथा मेरा गोवंश जो आज भूखा–प्यासा निराश्रित गली–मोहल्लों में फिर रहा है उसे गोपालकों के घरों में ससम्मान पुनः स्थापित करना है। मेरे गोवंश की रक्षा और सेवा में आपके त्याग और तपस्या अवश्य फलीभूत होंगे।

मेरे प्यारे पुत्रों! आपसे मुझे पूर्ण आशा और विश्वास है कि उपरोक्त लक्ष्य की प्राप्ति तक आप संतों के मार्गदर्शन में गोसेवा के लिए इसी तरह बिना थके तन–मन–धन से अनवरत लगे रहोगे और अपनी सफलता का परचम लहराओगे।

आपकी
अपनी माँ सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम् ।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्ष:2

कामधेनु-कल्याण

अंक:4

आषाढ़ मास शुक्लपक्ष वि.सं. 2082 रा.शाः 1947 जुलाई–2025

1.	**श्रीकामधेनु कृपा प्रसाद**– परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज	04
2.	**गोसेवा से भगवत प्राप्ति**– पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज	09
3.	**भक्त चरित्र**– पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज	11
4.	**गीता ज्ञान**– पू.परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानन्द जी महाराज	14
5.	**श्रीराम कथा**– पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज	17
6.	**युवाओं के साथ मन की बात**– पू. गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज	20
7.	**पूजा और भक्ति किसकी करें**– साभार साधक संजीवनी	24
8.	**परम् पुण्यशाली भक्तराज केवट**– साभार श्री रामचरितमानस	25
9.	**भक्तमाल कथा**– पू. श्री मुकुन्दप्रकाश जी ब्रह्मचारी	27
10.	**श्री मद्भागवत कथा**– गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी महाराज	28
11.	**हर मंदिर हो गोशाला**– सम्पादक, अम्बा लाल सुथार	30
12.	**संस्था समाचार**– जून माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण	31

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,

त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041

Mob. No. 9828052638

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक

अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क–2100 रुपये मात्र

मूल्य:20 रुपये

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

धरती पर गोसेवा से बड़ा कोई पुण्य नहीं

(23 मई 2022 किशनासर, बीकानेर)

सज्जनों! हमारी भारतीय संस्कृति में लौकिक और अलौकिक अभ्युदय के लिए भगवान ने स्वयं भगवती गोमाता का स्वरूप धारण किया और इस धरती पर पधारे। सतयुग में, त्रेता में मंदिरों का निर्माण नहीं होता था। यह भगवान का मंदिर जिसमें 33 कोटि देवता निवास करते हैं, ऐसा वेदलक्षणा गोमाता का मंदिर सबके लिये सुलभ था और सब तरह की जातियों के लोग, गरीब-अमीर सभी इस मंदिर में विराजमान परमात्मा का आशीर्वाद लेते थे। कालान्तर में मंदिर बनने लगे वह भी अच्छा है। शिव, शक्ति, सूर्य, गणेश और विष्णु ये पांचों ईश्वर कोटि के स्वरूप हैं, भोग और मोक्ष प्रदान करते हैं।

तो द्वापर युग से मंदिरों की सभ्यता प्रारम्भ हुई। उसके पहले गोमाता ही मंदिर था। यद्यपि उपासना के रूप में शिव, शक्ति, गणेश आदि रहे पर चलता फिरता देवालय गोमाता ही था। अर्वाचीन काल में भी जब हमारे देश में बाहर से आए विधर्मी विदेशी लोग मंदिरों में तोड़फोड़ करते उस समय भी हमारे पूर्वजों ने मंदिर की सभ्यता को छोड़कर गोमाता को ही अपनाया। अधिकतर परिवारों में कुलदेवी या इष्टदेवी का श्रीफल के रूप में पूजन करते थे। अब स्वाधीनता भी है और सुविधा भी है इसलिए मंदिरों की सभ्यता का विस्तार हो रहा है। आज किशनासर में हमने भगवान श्री रघुनाथ जी के सब परिवार के दर्शन किये और भोलेनाथ शिवजी का आज सोमवार था तो शिव अभिषेक भी किया। परम गोउपासक और शक्ति स्वरूपा श्री करणी माता जी के मंदिर का दर्शन भी हुआ। समाज में समरसता का संदेश देने वाले परम वैष्णव बाबा रामदेवजी के भी दर्शन हुए। राजपुरोहित समाज में जन्म लेकर समाज को ईश्वर से जोड़ने वाले ब्रह्मऋषि श्री खेताराम जी के धुने के दर्शन भी हुए और धोरावाली माता ओसियां के माताजी का एक विशेष स्थान धोरे पर है वहाँ भी दर्शन कर आये।

सज्जनों! जिन किशनदासजी की बात की गोलोक वासी किशनदासजी ने किशनासर की स्थापना की वे वैष्णव थे और भगवान रघुनाथ जी के अनन्य भक्त थे एवं उनके काल में अभी मुझे दो स्थानों पर ओरण बताये, एक इधर भी और एक उधर माताजी के स्थान के पास में 100-100 बीघों के दो ओरण हैं। अतीत में सबके घरों में बड़ी संख्या में गोमाताएं थी। यह राठी गोओं का क्षेत्र है। राठी गाएं बहुत सीधी होती हैं और खूब बहुत अच्छा दूध देती हैं। राठी के बाद थार नस्ल की गाय आती है वह भी गर्मी को सहन कर लेती है, ठंडी को भी सहन कर लेती है और कम से कम सुविधाओं में उन गौओं का पालन हो सकता है।

बीकानेर में, जैसलमेर में, जोधपुर का कुछ हिस्सा, बाड़मेर में, चुरू का कुछ हिस्सा, यहां पहले आकाश गंगा (बरसात का जल) के अतिरिक्त जल का कोई प्रबंध नहीं था। इसलिए जितने भी गांव बसाए गये उन गांवों से पहले वहाँ सरोवर बनाए गये उसके बाद गांव बसाये। इसलिये अधिकतर गांवों का नाम सरोवर पर है जैसे किशनदासजी ने गाँव बसाया तो उसमें किशनदास जी का नाम है और फिर सर यानि सरोवर का नाम। ऐसे ही सरोवर के तट पर गाँव

बसे। अब सरस्वती मैया का परिचय हुआ तो भूजल भी मिल गया और यहाँ पर बोरवेल भी खुद रहे हैं, पर सरोवर समाप्त नहीं होने चाहिए। यह जो सरोवर की सभ्यता है यह प्रकृति पौषक और सभी जीवों के लिए एक प्याऊ है। पशु पक्षी मनुष्य सबको जल मिलता है सरोवरों से। धरती में जल का पुनर्भरण भी होता है सरोवर के माध्यम से जिसे आप लोग अंग्रेजी में वाटर रिचार्ज बोलते हैं।

एक दशक पहले एक बड़े विद्वान आदमी हमारे पास आए और उन्होंने हमें कहा कि हम एक वाटर रिचार्ज प्लांट लगाना चाहते हैं। और उन्होंने हमको कहा कि हम बोतल रिचार्ज प्लांट लगाना चाहते हैं तो हमने पूछा क्या होता है तो बोले जहाँ नीची जमीन हो वहाँ पर एक कुआ खोदते हैं तो बरसात का पूरा का पूरा पानी वहाँ नीची जमीन होने के कारण उस कुए के माध्यम से भूजल में चला जाता है और बोले एक विशेष तकनीक आई है। हमने कहा यह विशेष तकनीक आई नहीं है यह हमारे पूर्वजों की है और हजारों सालों से हमारे पूर्वज इसको उपयोग में लेते आ रहे हैं।

हमारे गाँवों में जितने सरोवर होते थे अधिकतर उनके किनारे एक कुआ होता था। सरोवर जब पूरा भर जाता तो जो अतिरिक्त पानी होता था वह उस कुए के माध्यम से जमीन में चला जाता था। और जब सरोवर में पानी सूख जाता तब उसे कुएं से हमको पानी मिलता था। यह हजारों वर्ष पुरानी हमारे पूर्वजों की तकनीक थी। लेकिन जब यह घूमकर पश्चिमी देशों के माध्यम से फिर वापस हमारे यहाँ आती है तो हमको अच्छी लगती है, उसको हम करते हैं और कहते हैं नई तकनीक आई है। लेकिन कोई बात नहीं किसी भी तरह करो लेकिन करो तो सही।

सज्जनों! गोमाता मनुष्यों के लिए, देवताओं के लिए, ऋषियों के लिए सभी के लिए बहुत बड़ी उपकारिणी है। इसके अनंत उपकार हम सब पर हैं। आप लोगों से ज्यादा इस बात को और कौन समझ सकता है। आप लोगों के यहाँ बड़ी संख्या में गोपालन होता था और आज भी गोमाता का आशीर्वाद आप पर है। सैकड़ो पीढ़ियों से गोमाता ने हमको पाला है। आज उनके वंश पर संकट है। गोमाता के हम पर जो अनंत उपकार है उन उपकारों से उऋण होने का अवसर हमें मिला है। सनातन धर्म में एक नियम है कि अगर कोई हमारे लिए थोड़ा भी उपकार करे तो उसे चुकाने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए। यह सनातन धर्म है- एष धर्मः सनातनः। आज जब गोवंश को पीड़ा है और इसकी इतनी आवश्यकता समाज नहीं समझ रहा है तो गोमाता का जो ऋण है हमारे ऊपर उसको चुकाने की और उनका आशीर्वाद लेने की जो स्थिति प्रभु ने भेजी है इसका लाभ लेना चाहिए।

इस समय धरती पर गोसेवा से बड़ा कोई पुण्य नहीं है। यद्यपि हर युग में गोसेवा से पुण्य मिलता है तथापि वर्तमान में तो सर्वाधिक पुण्य गोसेवा का है। जो व्यक्ति, परिवार या गांव गोसेवा से जुड़ जाएगा उसको कलयुग की आपदाएं परेशान नहीं करेगी और वह लौकिक व अलौकिक दोनों दृष्टि से उत्थान की ओर अग्रसर होगा। गोसेवा करना बहुत बड़ी बात है। गोशाला खोल दी और चला रहे हैं उसे यह सामान्य बात नहीं है। एक गाय को भी चारा देना, पानी देना महान पुण्य का काम है। जिस खेड़ा में सैकड़ों गोवंश जो पहले दुःखी और भूखा प्यासा था उन्हें आश्रय और आहार मिल रहा है यह बहुत बड़ा अनुष्ठान है। जितने प्रकार के यज्ञ शास्त्रों में बताए गए हैं वे समस्त गोसेवा रूपी महायज्ञ में समाहित हैं। गोसेवा महायज्ञ से सभी देवताओं को, सभी ऋषियों को, सभी पितरों को, सभी पूर्वजों को तृप्ति मिलती है। हम सभी को इस महायज्ञ में अपनी-अपनी आहुति डालकर पराअंबा भगवती सुरभि गोमाता का आशीर्वाद लेना चाहिए।

गोमाता के आशीर्वाद से आरोग्य, समृद्धि एवं कुल की वृद्धि होती है। कुल बढ़ता है, अच्छी संतानें आती है। श्रेष्ठ संतानें गोमाता के आशीर्वाद से आती है। समृद्धि और वैभव गोमाता से मिलते हैं। आरोग्य गोमाता से मिलता है। जिस घर में गाएं सुखी रहे, प्रसन्न रहे वहाँ कोई आपदा नहीं आती है।

प्रात: काल गोमाता के गोष्ठ में गुग्गल और घी का धूप करें और शाम को गाय के घी से दीपक करें तो उसके घर में देवी शक्ति का निर्माण होता है और जो अशुद्ध या मैली आत्माएं हैं वे उस घर से दूर हो जाती है। गाय के गोमूत्र में गंगाजी का निवास है। इसलिए जहाँ गोमूत्र गिरता है वहाँ कोई जीव अधोगति में गया हुआ हो तो वो मुक्त हो जाता है। घरों में गोमूत्र के छिड़काव का विधान है। अगर ऐसा वहम हो जाए कि किसी के ऊपर कोई छाया का प्रभाव है तो उनको गोमूत्र का पान कराना चाहिए और उनके ऊपर छिड़काव भी करना चाहिए उससे तत्काल शांति हो जाती है।

गाय के गोमय (गोबर)में लक्ष्मीजी का निवास है। गोमय के एक-एक कण का सदुपयोग करने से श्री बढ़ती है, लक्ष्मी बढ़ती है। गाय का गोबर वैसे तो धरती का आहार है, लेकिन घर में भी गाय के गोबर से लेपन किया हुआ एक स्थान होना चाहिए। जहाँ बैठकर आप गीता-रामायण पढ़ सकें, भजन कर सकें। घर में तुलसीजी का पौधा हो, गाय के घी का दीपक हो और गोमय से लीपी हुई भूमि हो तो अनेक प्रकार के संक्रमणों से मनुष्य बच सकता है। ऐसा सुनने में आया है कि यह जो परमाणु बम है उसके प्रभाव से भी मनुष्य बच सकता है अगर गाय के गोबर से लीपि हुई झोपड़ी के अंदर रहता है तो। गाय का गोबर इतना शक्तिशाली है कि वह विनाशकारी विष से और भयंकर रोगों से मनुष्य की रक्षा करता है। कोरोना संक्रमण अभी चल ही रहा है सभी लोग इससे परिचित भी है। इस तरह के संक्रमणों से बचने का उपाय भी पंचगव्य है। गाय का दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र ये पांच मिलकर पंचगव्य कहलाता हैं। यह अमृत है, यह महान पवित्र है और सभी औषधियों का सार है इसमें। तो पंचगव्य आरोग्य भी देते हैं, पवित्रता भी देते हैं और सुरक्षा का कवच भी बनाते हैं।

अगर हम अपनी रसोई में गोमय की खाद से उपजे हुए अन्न, फल, सब्जियों का उपयोग करते हैं तथा गाय के घी, दूध, दही का उपयोग करते हैं तो अनेक प्रकार की बीमारियों से बच सकते हैं साथ में शरीर का तेज, औज बढ़ता है, व्यक्ति बलवान होता है और सुंदर भी होता है। बच्चों को गाय का दूध पिलाने से उनका संपूर्ण विकास होता है। इससे बच्चे सुडोल होते हैं सौम्या होते हैं और सुंदर होते हैं। गर्भिनी माताओं को भी गाय के दूध में थोड़ा-थोड़ा घी डालकर पिलाने से उनको स्वयं को तो पुष्टि मिलती ही है साथ ही गर्भ में पल रहे बालक को भी पुष्टि मिलती है।

वृद्ध माता-पिता जो है उनको भी गाय का दूध पिलाना चाहिए उससे उनको बल मिलता है और बहुत आसानी से गाय का दूध उनको पच जाता है। बीमार व्यक्तियों को भी गाय का दूध तत्काल शक्ति देता है और रोगप्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाता है। गाय का दूध बालकों के लिए, वृद्धों के लिए, असक्तों के लिए, बीमारों के लिए, गर्भिणी माताओं के लिए सबके लिए अमृत का काम करता है। ऐसे ही छाछ भी बहुत उपयोगी है। कहते हैं कि दही से बनी हुई छाछ जो खट्टी नहीं हो बिगड़ी हुई नहीं हो वह आंतों के लिए परम अमृत का काम करती है। इंद्र भी इसके लिए तरसते हैं। कहते हैं गाय की छाछ बहुत ही दुर्लभ वस्तु है।

जिन घरों में गाएं हैं वे बहुत भाग्यशाली है। आपके पूरे किशनासर गांव के अंदर सभी घरों में गाएं ही गाएं हैं, एक-दो घरों में भैंस हो सकती है, ताकि गांव को नजर नहीं लगे। जैसे छोटे बालक होते हैं उनको नजर नहीं लगे तो एक काजल का

टीका लगा देते हैं ऐसे ही किशनासर में एक आध किसी के घर में काला टीका हो सकता है।

आपके गांव में इतनी गाएं हैं तो बछड़े होते होंगे, बछड़िया होती होगी। बछड़ों का उपयोग खेती में नहीं हो रहा है, यह आप लोगों को पता ही है। अगर यहाँ से कोई खेती के नाम पर बछड़े ले जाता है तो हमको समझ लेना चाहिए कि आज की तारीख में कहीं पर भी बैलों से खेती नहीं होती है। इसलिए बछड़े बेचने या सूना छोड़ने की बजाय दूध पीना छोड़ते ही बछड़ों को गोशाला में रखने की व्यवस्था होनी चाहिए। एक भी बछड़ा सूना नहीं छोड़ना चाहिए। आपके गांव में दो गोशालाएं हैं उनमें से एक गोशाला ही रहे और दूसरी को नंदीशाला बना दी जाए जिसमें केवल बछड़े और बैल ही लिए जाएं। अगर आपके आपस में ऐसी बात बैठ जाए तो हमको बहुत प्रसन्नता होगी और गाएं और नंदी, बैल बहुत सुखी हो जाएंगे। बछड़े के साथ-साथ अपने सामर्थ्य के अनुसार चारा भी गोशाला में जमा कराओ।

समाज के सहयोग से पिछले 20-25 वर्षो से गोसेवा हो रही है, अब सरकार ने भी गोसेवा में सहयोग करना आरंभ कर दिया है। इसलिए ज्यादा डरने की बात नहीं है, गाँव में एक भी गोवंश भूखा नहीं रहना चाहिए। आज जब हम माताजी के दर्शन करने के लिए निकल रहे थे तो सामने एक बछड़ा मिला जिसका पेट पिचका हुआ था और वह चल भी नहीं पा रहा था। हमारे लालजी और भंवरजी दोनों ही अलग-अलग गोशाला की व्यवस्था देखते हैं, हमारा दोनों से आग्रह है कि बिना संकोच जो भी निराश्रित गोवंश गांव में घूम रहा है उसको ले लीजिए। कोई कमी नहीं रहेगी। डरना मत की चारा कहाँ से लाएंगे, पानी कहाँ से पिलाएंगे, छाया कैसे करेंगे। चारा मिलेगा, भूखे नहीं रहेंगे। सब व्यवस्थाएं होगी। जिस गाँव में हम सैकड़ो गायों की सेवा कर रहे हैं उस गाँव में अगर एक दो भी भूखे गोवंश घूमते हैं तो उससे हमारा पुण्य नष्ट होता है। एक तरफ हम सौ गायों को जीमा रहे हैं और दूसरी तरफ एक गाय भूखी रह रही है तो यह भी तो दोष है। इसलिए गाँव में कोई भी गोवंश भूखा नहीं रहना चाहिए।

गाँव में सबसे निवेदन कीजिए। यहाँ जो विराजे हुए हैं उनसे हमारी प्रार्थना है कि जब तक गोमाता दूध ा देती हैं तब तक बछड़ों को घर में रखिए उसके बाद अगर नहीं रख सकते तो सूना मत छोड़िए उनको गोशाला में लाकर जमा करा दीजिए। सामर्थ्य हो तो साथ में चारा दाना के लिए कुछ राशि भी जमा करवा दो और अगर समर्थ नहीं हो तो कोई बात नहीं भगवान सामर्थ्य देंगे। हम जब भोजन कर रहे हैं, भूखे नहीं रहते हैं इसका मतलब है कि कुछ ना कुछ सामर्थ्य तो है ही। तो बछड़ों के साथ में भी गोशाला को कुछ चारा देना चाहिए। अब मन में ज्यादा लोभ घुस गया है तो ऐसे को भी असमर्थ ही समझना चाहिए और उनके गोवंश को भी उदारतापूर्वक गोशाला में ले लेना चाहिए। गोशाला संचालन समिति को यह नहीं सोचना चाहिए कि यह परिवार तो समर्थ है और कुछ दे नहीं रहा है। लेकिन वास्तव में वह समर्थ है नहीं मन से असमर्थ हो गया है। इसलिए यह सजा बछड़ों को नहीं दें, उन्हें भूखे नहीं मरने दें, उनको भी गोशाला में ले लें।

मुझे विश्वास है कि जिस तरह की गोसेवाएं इस गाँव में हुई है यह गाँव अभ्युदय को प्राप्त होगा। समृद्ध होंगे। यहाँ यह अलग बात है कि लक्ष्मीजी तिलक करने आवे जब बोलें कि नहीं पहले हम तो ललाट धोने जाएंगे, वे बच जाते हैं। बाकी यह गोसेवा है यह अवसर है आशीर्वाद लेने का। अगर आर्थिक रूप से कमजोर हैं तो भी गोसेवा करो तो धन बढ़ेगा, लक्ष्मी आएगी दौड़ी हुई और लक्ष्मी है तो करना ही है, उससे और बढ़ेगी। लक्ष्मी को बढ़ाने का भी सर्वोत्तम रास्ता गोसेवा ही है। धन, यश, पद, कीर्ति, पुत्र ये सब पुण्य से मिलते हैं और गोसेवा से बड़ा कोई पुण्य नहीं है। इसलिए सभी को गोसेवा करनी चाहिए। गोसेवा का लाभ सभी को लेना चाहिए।

बहुत दिनों से हमारे मन में किशनासर गाँव का दर्शन करने की इच्छा थी, क्योंकि यह भगवान श्री कृष्ण के नाम से है और हमारा संबंध श्री कृष्ण से है। हमको पता नहीं था कि इस गाँव को बसाने वाले आदिपुरुष का नाम किशन जी है। यह यहाँ आने के बाद हमको पता लगा। उनका जो अश्व पर विग्रह है उसका सुबह दर्शन भी किया। सहज रूप से जब इस गाँव का नाम सुनते हैं तो बहुत अच्छा लगता है।

गाय को घर में रखते हैं और उसके साथ पशु जैसा व्यवहार करते हैं तो हम गोसेवा का पूरा लाभ नहीं ले सकते हैं। गाएं भगवान का स्वरूप है। भगवत भाव से गाय की सेवा करें। गाय के बैठने की जगह की सुंदर सफाई करें, वहाँ कोई कांटा-कंकड़ आदि ना हो ऐसे जैसे हम अपने स्वयं के शयन कक्ष को कितना सुंदर और सुगंधित रखते हैं ऐसे गाय के बैठने के स्थान को, गोष्ठ को, सुंदर साफ सफाई करके धूप दीपक करके सुगंधित रखना चाहिए। अगर बारिश के दिन हो तो मच्छर उड़ाने के लिए धुंआ करें, गर्मी हो तो बढ़िया छप्पर बनावे और ठण्ड हो तो ठण्ड से बचाव का उपाय करें। ये सब चीजें करने से यानि कि गाय को कोई कष्ट ना हो ऐसी भावना रखने से गोमाता की कृपा का अनुभव होता है।

गाय का सारा दूध नहीं दोहना चाहिए। दो थन दोहने का विधान है, दो थनों का दूध बछड़े को पिलाएं जब तक बछड़ा चारा-दाना खाना आरंभ नहीं करे। बछड़े के भाग का दूध दोहते हैं तो वह दोष है हाँ जो बछड़ा अपने आप भोजन करने लग जाए तब थोड़ा अधिक दूध आप दोह सकते हैं। बछड़ा हो या बछड़ी हो अगर बचपन में दूध नहीं मिलेगा तो अच्छी नस्ल तैयार नहीं होगी। हमारी यह गाएं 16 लीटर से 40 लीटर तक दूध देने की क्षमता रखती है, लेकिन बछड़ों को बचपन में पर्याप्त दूध नहीं पिलाने से नस्ल गिरती गई अब दूध कम हो रहा है तो बछड़ों बछड़ियों को अच्छा दूध पिलाएं और अच्छे नंदी रखें जिनकी माँ श्रेष्ठ कुल की हो, ताकि आगे नस्लें सुधरे।

गीता का सार - शरणागति

(परम् श्रद्धेय स्वामी श्रीरामसुखदासजी महाराज)

जो जाको शरण गहै, ताकहँ ताकी लाज ।
उलटे जल मछली चले, बह्यो जात गजराज ।।

नदी के तेज प्रवाह में यदि बलवान हाथी भी आ जाये तो वह टिक नहीं सकता, लुढक जाता है, परन्तु छोटी सी मछली उस तेज प्रवाह में भी बड़े आराम से घूमती है। इतना ही नहीं अगर ऊपर से जल की धारा तीव्रगति से नीचे गिर रही हो तो उस धारा में भी छोटी-छोटी मछलियाँ ऊपर चढ जाती हैं! इसका कारण यह है कि हाथी ने तो जंगल की शरण ले रखी है, पर मछली ने जल की शरण ले रखी है। जल के सिवाय और जगह वह व्याकुल हो जाती है, जल के वियोग में मर जाती है। अगर जल मछली को बहा दे तो बेचारी मछली कहाँ जायेगी? किसकी शरण लेगी? इसी तरह अगर हम भगवान की शरण ले लें तो फिर कोई भी शक्ति हमें रोक नहीं सकती। इसलिये भगवान कहते हैं कि तू चिन्ता मत कर-

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज: ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि: मा शुच:।।

सम्पूर्ण धर्मोका आश्रय छोड़कर (तू), केवल मेरी शरण में आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूंगा, शोक मत कर।

हमने भगवान की शरण ले ली, फिर अपने उद्धार की चिन्ता हम करें- यह बड़े आश्चर्य की और मूर्खता की, बेसमझी की बात है!

जब तक साधक में अपने बल, बुद्धि, योग्यता आदि का आश्रय रहता है, ''मैं कर सकता हूँ''- यह अभिमान रहता है, तब तक शरणागति नहीं होती। जब अपने बल का आश्रय नहीं रहता, तब बड़ी सुगमता से शरणागति होती है। इसलिये कहा है-

जब लगि गज बल अपनो बरत्यो, नेक सरयो नहिं काम।
निरबल हों बल राम पुकारयो, आये आधे नाम।।
सुनो री मेरे निरबल के बल राम।

गोसेवा से भगवत प्राप्ति

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

वल्लभ कुल के एक भोले ग्वाल की चर्चा है। वह गुजरात का था। बचपन में यहां आ गया। गोसाई श्री विट्ठल नाथ जी का शिष्य था। वह यतिपुरा में निवास करता और श्रीनाथजी की गैया चराता था। विट्ठलनाथ जी का शिष्य था लेकिन विट्ठलनाथ जी को काकाजी कहता था। लोग कहते थे गुरुजी है गोसाईजी कहो, गुरुजी कहो, लेकिन वह काका कहता था। गोसाईजी कहते- कोई बात नहीं भोला आदमी है, वो जो कहे सो ही ठीक है। गोसाईजी हमेशा उससे प्रसन्न रहते थे। उसको अष्टाक्षर मंत्र का उपदेश कर दिया था। श्री कृष्ण शरणम् मम। कहा कि इसका निरंतर जाप करो और श्रीनाथजी की गैया दु:खी नहीं रहे, उनकी सेवा करो।

वह मन से गोसेवा करने लगा। एक बार इतनी जोर का पानी बरसा कि 8-10 दिन तक झड़ी लगी रही। पानी बंद ही ना हो। ऐसे में चारों ओर पानी ही पानी हो गया। गाय चरने को बाहर नहीं जा सकी। गायों को गोष्ठ में ही रहना पड़ा और वह अहर्निश गायों की सेवा करता रहा। गाएं जब गोष्ठ में खड़ी हो तो उनका गोबर उठाना, गोमूत्र साफ करना वगैरह सब कितना कठिन काम है, पर सब करता रहा। इतने अधिक काम में वह भोजन करने भी वहाँ नहीं जा पाता था। श्रीनाथजी का प्रसाद भेजने में भी किसी ने ध्यान नहीं दिया। वह भूखे-प्यासे ठाकुर जी की गैया की सेवा करता रहा जिससे श्रीनाथजी उसकी गोसेवा से रीझ गए और अपना राजभोग लेकर शाम को ठाकुर जी स्वयं उसके पास पधारे। देखो तूने इतने दिन से भोजन नहीं किया है मैंने भी भोजन नहीं किया है। हम दोनों गोष्ठ में साथ साथ बैठकर पाएंगे। वह थोड़ा रूठ गया था कि सब स्वार्थी है हमारा किसी ने ध्यान दिया नहीं। गोमाता का भी किसी ने ध्यान दिया नहीं ऐसी स्थिति में हम गायों को छोड़कर कहाँ जाते।

ठाकुरजी उसके भाव पर, उसकी सेवा पर इतने रीझ गए कि कई बार उसकी सैया पर ही श्रीनाथजी सोने के लिए चले आते। उसकी खटिया पर उसके साथ ही पौढ जाते श्रीनाथजी और ठाकुर जी उनके श्री अंग की कोई वस्तु भी वहीं छोड़ देते। गोसाईजी प्रसन्न तो होते कि ठाकुरजी इसकी गोसेवा से प्रसन्न होकर लीला कर रहे हैं, लेकिन मन में आता कि ठाकुरजी को कष्ट हो रहा है। कहाँ ग्वाल की टूटी-फूटी खटिया और कहाँ श्रीठाकुरजी के निज महल की सेज और उसको छोड़कर यहाँ आ जाते हैं। तो उन्होंने कहा ग्वालबाल तुम रात्रि को वहाँ मत सोया करो। गैया चराकर आते हो रात्रि में तो गैया वहीं बांध दो और कोई काम है नहीं तो तुम रात्रि को अपनी लकुटिया लेकर श्रीनाथजी के द्वार पर भजन करो और जब नींद आ जावे तब यहीं सो जाया करो और सुबह अपनी लकुटिया लेकर गैया चराने निकल जाओ। यह इसलिए उसको आज्ञा दी कि ठाकुर जी को कष्ट ना हो।

तो गुरुजी की आज्ञा पाकर वह श्रीनाथजी के द्वार पर ही सोने लगा। शरद पूर्णिमा आई, वो सो रहा था और अर्ध रात्रि को नूपरों की आवाज ही आवाज सुनाई पड़ रही है और जगा तो श्रीनाथजी के मंदिर का द्वार खुला, ठाकुर जी रासबिहारी जी के स्वरूप में वहाँ से निकले, राधा जी निकली और हजारों गोपियाँ ललिताजी, विशाखा, रंगदेवी वगैरह साथ में निकली। वह ग्वालबाल सोचे अपने मन में कि अरे राम राम! ये गोसाईजी ने कितनी लुगाई घुसा रखी है मंदिर में! इतनी लुगाई इसके अंदर कैसे समा गई! हमको तो इनकी सुरक्षा में भेजा है तो इनके पीछे-पीछे हमको चलना चाहिये कोई जंगली जीव इन पर आक्रमण न कर दे, इनको नुकसान न पहुँचा

दे। तो वह उनके पीछे चलता चलता यतिपुरा से चंद्र सरोवर पहँच गया। शरद पूर्णिमा की तिथि थी और रात को उसने महारास का प्रत्यक्ष दर्शन किया। आज के महारास में एक विलक्षणता थी। रास में हमेशा ठाकुर जी अंतर्धान होते हैं, आज राधा रानी अंतर्धान हो गई। राधा रानी के अंतर्धान होने से श्रीनाथजी को श्रीजी का वियोग व्याप्त हो गया। तो राधे राधे करके ठाकुर जी रोने लगे। कहीं मुकुट गिर गया, कहीं मुरली गिर गई, कहीं चंद्रिका गिर गई। एक-एक आभूषण श्री अंग से गिरता जा रहा है। अब वह ग्वाल बाल एक-एक करके आभूषण बटोरता जा रहा है।

सुबह की मंगला आरती का समय हुआ तो ठाकुरजी तो लीला करके पुनः मंदिर में लौट आए। गोसाई जी ने मंदिर खोला तो भगवान का मोर मुकुट, मोर पिछ, कण्ठ का हार आदि सब आभूषण गायब है। तो उन्होंने गोसाई जी ने ग्वाल भगत को बुलाया और कहा कि हमने तो आपको यहाँ पर सुरक्षा के लिए बिठाया था। रात को मंदिर बंद था या किसी ने खोला था? भगवान के ये सब श्रीअंग के आभूषण कहाँ गए? तो गवाल भगत बोला महाराज कछु ना पूछो। आप इनको जितना सीधा समझ रहे हो इतने सीधे नहीं हैं ये। आपके सामने ये भोले-भाले बने रहते हैं। इन्होंने मंदिर में बहुत सी लुगाई घुसा के रखी है। हम तो गिनती नहीं कर पाए इतनी लुगाई थी।

ये अर्ध रात्रि के बाद यहाँ से निकले और उनके पीछे-पीछे हम चंद्र सरोवर तक गये। वहाँ जोर का नाच-गान हुआ। इनमें सबसे सुंदर गोरी-गोरी जो थी पता नहीं वो कहाँ छुप गई। उसके पीछे ये राधे राधे करके रोने लगे। कभी इनकी मुरली गिर गई कभी लकुटिया गिर गई, कभी चंद्रिका गिर गई, कहीं मोर मुकुट गिर गया। अब हम तो उनको एकत्रित करने लगे और एक पोटली में बांधकर लाया हूँ ये लो। गोसाई जी ने तो ग्वाल भगत को गले लगा लिया। धन्य हैं आपको निष्काम भाव से गोसेवा करते-करते केवल श्रीकृष्ण के दर्शन ही नहीं, आपको साक्षात् महारास के दर्शन हो गए।

भजन करने वाली माताओं के लिये

माताओं के मन में अगर भक्ति की भावना है तो सर्वोत्तम है कि वे अपने पति के साथ रहकर भक्ति करें। मानलो विवाह नहीं किया वैराग्य के आवेश में आकर तो अपने जीवन को अत्यंत पवित्र बनाकर रखें और अपने माता-पिता की सेवा करते हुए भजन करें अथवा जहाँ स्त्री साधिकाएं रहती हैं वहाँ रहकर भजन करे पर पुरुषों के बीच में माताओं का रहकर भजन करना और पुरुषोंका माताओंके बीच में रहकर भजन करना खतरे से खाली नहीं है।न तो स्त्री से घृणा है और न पुरुष से विद्वेष है, यह जीवन केवल भगवत प्राप्ति के लिए मिला है और सावधानी हटी कि दुर्घटना घटी। इसलिए सब सावधान होकर रहें।

गाय की ससम्मान सेवा करें

कर्म की रेखा बदल जायेगी, भजन तो करो। भाग्य रेखा बदल जायेगी, आप गाय का गोबर उठाकर तो देखो। पहले लोग बड़ी श्रद्धा से गाय का गोबर अपने हाथों से उठाते थे। जूता चप्पल पहनकर कोई गोशाला में प्रवेश नहीं करता था। शास्त्र में लिखा है गाय के पास जाएं तब जूते तो क्या खड़ाऊ भी उतार कर जाते हैं। अब जूते चप्पल पहनकर गोशाला में घुसेंगे, गोबर हाथ नहीं लगायेंगे क्योंकि उससे एलर्जी हो जाती है और फिर गाय को भगवतस्वरूप न मानकर गाली भी दे देंगे, प्रहार भी कर देंगे, तिरस्कार भी कर देंगे। फिर कह देंगे- महाराज इतने दिनों से गाय की सेवा कर रहे हैं हमारे काम क्यों नष्ट नहीं हुए, हमारे विकार क्यों नष्ट नहीं हुए? हमको भगवान का प्रेम नहीं मिला? आपने गाय को भगवान मानकर सेवा कब की? इसलिये लाभ लेना है गोमाता से तो गोमाता को भगवतस्वरूप मानकर सेवा करो और निरन्तर भजन करो।

भक्त चरित्र

परम् वैष्णव हरपाल जी का चरित्र

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

भगवान की भक्ति की बड़ी विलक्षण महिमा है। इतनी विलक्षण महिमा है भक्ति की कि भगवान स्वयं भक्त से लुटने के लिये आ जाते हैं। इसको आप लोग आदर्श और अनुकरणीय मत मान लेना। हम पहले से सावधान कर देते हैं। उच्च कोटि के जो भक्त हैं उनकी बात कह रहे हैं, भगवान के अनन्य प्रेमी भक्त हैं उनकी बात कह रहे हैं। कथनचित्त कोई दोष भी उनके जीवन में आ जाए तो वह दोष भी उनको संसार के चक्कर में डालने वाला नहीं होता अपितु वो दोष भी भगवान की उपासना का गुण बन जाता है और भगवान उस दोष को ही गुण मान करके रीझ जाते हैं।

एक ऐसे भक्त का चरित्र आता है, ब्राह्मण कुल में उनका जन्म हुआ था और उस भक्त का नाम था श्री हरपाल। वे भगवत कृपा से बड़े संपत्तिशाली सेठ और श्रीमंत थे, पर भगवान की विशेष भक्ति थी उनके मन में। संसार से, शरीर से पूर्ण वैराग्य था। विवाह नहीं करना चाहते थे, पर एक ब्राह्मण कन्या थी, उसने यह प्रतिज्ञा की हुई थी कि जो हजार साधु, ब्राह्मणों, गायों को रोज जो भोजन करवायेगा उससे विवाह करूंगी। जब हरपाल जी के कान में यह बात पहुँची तो हरपाल जी के मन में आया कि भैया ऐसी भक्त कन्या मिले तब तो विवाह किया जा सकता है। वैदिक पद्धति से दोनों का विवाह हो गया। अब घर में ठाकुर सेवा, संत सेवा, ब्राह्मणों की सेवा, गौ माता की सेवा का बड़ा कार्य। अब सेवा के काम में ऐसे तल्लीन हो गए हरपाल जी कि अब कमाने के लिये उनके पास समय ही नहीं बचा। बस आठो पहर सेवा ही सेवा। जब कोई कमाए कुछ नहीं और खर्च ही खर्च करे तो कुबेर का खजाना भी खाली हो जाएगा। उनके पास जितनी चल संपत्ति थी सब साधु, ब्राह्मण और गोमाता की सेवा में, उत्सव-महोत्सव में जय हो गई। कुछ नहीं बचा तो अचल संपत्ति बेचना आरम्भ किया। अब जब वह भी नहीं रहा तब हरपाल जी ने लोगों से उधार लेकर सेवा करना शुरू किया। भैया उधार दे दो हम पर समय आएगा तब तुमको चुका देंगे। आप बड़े आदमी थे, बड़े आदमी की बाजार में साख होती है तो लोग सोचते कि जरूर कहीं उन्होंने कोई खजाना रखा होगा अभी तो उधार लेते जा रहे हैं, जब चाहेंगे तब खजाना निकालकर चुका देंगे। ऐसा लोग मन में सोचते थे इसलिए वे उनको आसानी से उधार दिये जा रहे थे।

लेकिन जब उधार चुकाने का अवसर आया तब उनमें उधार चुकाने की शक्ति नहीं थी तो लोग समझ गए कि ये उधार तो ले लेते हैं पर देने का तो नाम तक नहीं लेते हैं तब लोगों ने उधार देना भी बंद कर दिया। इतना होने पर भी हरपाल जी ने गौ, ब्राह्मण, संतों की सेवा बंद नहीं की। जहाँ पक्षियों को चुगा डालना प्रारंभ करें, वहाँ हजारों पक्षी आने शुरू हो जाते हैं। ऐसे ही हरपालजी के वहाँ भी हजारों साधु संत ब्राह्मण रोज भोजन पाने आने लगे। उनको दर्शन देते सत्संग होता और सबको भोजन करवाते। ऐसे करते-करते घर में एक समय का भी राशन नहीं बचा तो धर्म पत्नी के जो गहना था उसे बेचकर सेवा की।

अब जब गहना भी बिक गया तो हरपाल भक्त अब चोरी करते। आप लोग ऐसा मत करना। इसलिए हमने पहले ही सावधान कर दिया। वे लोगों के घरों में रात को चोरी करते। चोरी में सोना-चांदी नहीं चुराते। आटा, दाल, चावल यह जो राशन सामग्री होती उसी को उठा लाते और उसी के घर से लेते जो कमाता तो खूब था पर साधुओं की, ब्राह्मणों की सेवा नहीं करता। जो भक्त है, सेवा करता उसके वहाँ चोरी नहीं करते। एक दिन चोरी करने हेतु एक वैश्य के घर में हरपाल जी पहुंच गए। वैश्य भी भगवान का बड़ा भक्त था।। उसके घर में घुसे और आटा, दाल,

चावल, घी, बूरा सब अलग-अलग रखकर उन्होंने बांध लिया। वहाँ से जाने वाले थे तब तक वैश्य की लड़की जग गई और उसने धीरे से अपने पिताजी से कहा- पिताजी लगता है घर में कोई चोर घुस आए हल्ला मचाओ। लगता घर में कोई चोरी कर रहा है सब सामान उठा रहा है। तो सेठ ने कहा धीरे से- मेरी बेटी चुप हो जा, सो जा। हम तो इसीलिए रोज अपने दरवाजे पर कुंडी भी नहीं लगाते हैं कि कभी महान संत सेवा प्रेमी साधु सेवा में प्रेम करने वाले भक्त राज हरपालजी की चरण रज हमारे घर में पड़ जाए। ये चोर नहीं है ये तो इस नगर के महान संत श्री हरपाल जी है जो हमारे अन्न चून को साधु सेवा में लगाएंगे।

साधुओं में कहावत है- जिसका चून उसका पुन, साधु को न पाप न पुन। अब हरपाल जी के कान में यह बात पड़ गई तो सोचा कि धोखा हो गया किसी भक्त के घर में आ गए हम तो। राशन की बंध ी हुई गांठ को वहीं छोड़ कर चले आए। सुबह दिन निकलते ही वह सेठ सारा सामान लेकर पहुंच गया हरपाल जी के घर- बोले महाराज मेरे मन में बहुत दिन से मनोरथ था कि आपके यहाँ कुछ अन्न चून सेवा में लग जाए। यह आपका वस्त्र भी है और कुछ अधिक ले जाकर उसने समर्पित किया। ऐसी सेवा करते थे हरपाल जी।

एक बार ठाकुर जी ने परीक्षा लेनी चाही। एक दिन कोई विशिष्ट महापुरुष आए उनके साथ संतों की बहुत भारी जमात थी और वह जमात जैसे ही हरपाल जी के यहाँ पहुँची हरपाल जी ने सबको साष्टांग प्रणाम किया और आसन आदि जो उनके यहाँ थे, देकर बैठाया। धर में जाकर पत्नी से कहा कि कुछ है घर में साधुओं के प्रसाद की व्यवस्था के लिये। पत्नी ने कहा- स्वामी आपसे क्या छिपा हुआ है कुछ नहीं है घर में। अच्छा कोई बात नहीं महात्माओं को पता ना चले कहीं चले गए साधु तो ठीक नहीं होगा, इनका प्रेम है जो अपने यहाँ पधारे हैं। आपके हाथ में जो अंगूठी है उसी को देकर के कुछ बालभोग की व्यवस्था हो जाए और बाकी व्यवस्था सब ठाकुर जी करेंगे।

हमेशा रात में चोरी करते हैं, आज दिन दहाड़े ही राहजनी करेंगे। तो हरपाल जी निरंतर भगवान नाम का जाप करते हुए बड़े-बड़े तिलक धारण करके थे तुलसी माला और वह ललाट पर अपनी थोड़ी टीका कर खड़े हो गए और है मन में प्रार्थना करने लगे- द्वारकाधीश प्रभु आज संतों की लाज रख दो। आज हमारे घर में मेहमान आए हैं। घर में खाने को कुछ नहीं है। भगवान ने प्रार्थना सुन ली। आज और कोई मालदार सेठ नहीं आया।

आज भगवान स्वयं घर से हीरा जवाहरात पहनकर हड़बड़ी में जल्दी-जल्दी रवाना हुए तो रुक्मणीजी ने कहा- प्रभु इतना सारा गहना सोना पहनकर सेठ के वेश में कहाँ जा रहे हो? यह सुनकर ठाकुर जी के नेत्र भर आए। बोले देवी विलंब हो जायेगा, तुम बातों में मत लगाओ। मेरा एक भक्त अध ीर होकर मुझे पुकार रहा है। आज मैं उस अकिंचन भक्त के दर्शन करने जा रहा हूँ। रुक्मणी जी ने कहा ऐसा कैसा भक्त है कि आप स्वयं उसके दर्शन करने जा रहे हो? भक्त तो अपने भगवान के दर्शन करने के लिये तरसते हैं और यहाँ आप स्वयं भक्त के दर्शन करने जारहे हो। भगवन! ऐसे भक्त के तो मुझे भी दर्शन करने की इच्छा हो रही है। हम भी दर्शन करना चाहते हैं।

भगवान बोले देर मत करो, चलना हो तो गहनों से लदकर चलो साथ में। जल्दी चलो, मेरा भक्त बहुत याद कर रहा है। इतने में भगवान रूक्मणीजी सहित हरपालजी के सामने प्रकट हो गए। वे तो आंख बंद करके भगवान का चिंतन कर रहे थे, जप कर रहे थे। प्रभु आज हमारे घर में मेहमान आए हैं, आपके प्राण प्यारे संत आए हैं, आप लाज रखना। संत भूखे ना चले जाएं। ऐसा सोच रहे थे इतने में ठाकुर जी के आभूषणों की आवाज उनके कानों में पड़ी। नेत्र खोलकर देखा तों सामने भगवान और रूक्मणीजी खड़े हैं। उनके शरीर पर आभूषण लदे हुए देखकर

हरपालजी सोचने लगे कि इतना गहना शरीर पर पहन रखा है तो घर में इनके कितना होगा?

हरपाल जी ने हाथ जोड़कर कहा- भगत जी राम-राम। भगवान बोले- खूब समझते हैं तुम्हारे जैसे नकली भक्तों को। यह भक्तों का भेष बनाने वालों ने देश का बेड़ा गरक किया है। दिन भर राम-राम करते हो और रात में चोरी करते हो? हम सब जानते हैं और हम तो ऐसे ढोंगियों को भीख तक नहीं देते हैं। जाओ अपना रास्ता नापो। हरपाल जी ने सोचा मन में कि यह तो बहुत भारी दुष्ट है। यह महाविमुख है, भगवान के नाम को सुनकर इसके भीतर आग लग गई। अरे राम राम! बड़ा भारी नास्तिक आदमी है, इसको तो जरूर लूटना है।

हरपाल जी बोले कोई बात नहीं, मेरी बात से आपको कोई कष्ट हुआ हो तो आप क्षमा करें। मैं आपकी कोई सेवा कर सकता हूँ? भगवान बोले कि हमको अमुक नगर तक जाना है और हमारे पास तुम देख ही रहे हो कि कितने आभूषण हैं, इसके अलावा कुछ मुद्राएं भी हमारे पास है। हमने सुना है कि यहाँ इस क्षेत्र में हरपाल नाम का बहुत बड़ा डकैत है, सब लूट लेता है। तो उससे हमको सुरक्षित बचाकर इस जंगल के रास्ते को पार करवा दो। हरपाल जी बहुत प्रसन्न हुए चलो हमारा ही नाम ले रहा है। हाँ सेठजी आप सही कह रहे हो वह बहुत खतरनाक लूटेरा है, सब कुछ लूट देता है। ठीक है सेठजी हम आपको सामान सहित आप कहोगे वहाँ तक सुरक्षित छोड़ देंगे पर बदले में आप हमको क्या देंगे? प्रभु ने कहा जो आप कहोगे वो मजदूरी देंगे। तो हरपाल जी ने कुछ मांग लिया और कहा- देखो हमको मजदूरी पहले दे दो क्योंकि हमारे घर में कुछ मेहमान आये हुए हैं उनके भोजन प्रसाद की व्यवस्था हो सके। सेठजी ने हरपाल जी को मुँह मांगी मजदूरी दी तो उन्होंने घर जाकर दे दिया और उससे सब व्यवस्था हो गई।

अब हरपालजी ने श्री कृष्ण का सामान उठाया और आगे-आगे चलने लगे। प्रभु ने कहा आप पीछे मुड़कर मत देखना क्योंकि हम अपनी सेठानी के साथ क्या बात करते हैं आप भगत आदमी आपको सुनने की क्या जरूरत है। रूक्मणी जी बोली कुछ गोसेवा, संत सेवा के लिये इनको दे दें। भगवान बोले अरे क्या मूर्खता की बात करती हो, सेवा करना महामूर्खता का काम है। पैसों को कहीं धंधे में लगाओ तो और पैसा मिलेगा। देखो इतने खजाने वहाँ भर गए हैं, अब वहाँ नया धंधा खोलना है। इस भिखारी को देकर धन डुबाना थोड़े ही है। भगवान और रूक्मणीजी जानबूझकर ऐसी विपरीत बातें सुना रहे हैं हरपालजी को।

भगवान सोच रहे हैं कि ऐसा साधु सेवा प्रेमी ऐसा अकिंचन भक्त, इसकी चरण रज मैं आज अपने मस्तक पर लगाऊंगा। भगवान ने उसे पीछे देखने से इसलिये मना कियाथा कि इसकी चरण रज लगाते इसने देख लिया तो मेरी लीला बिगड़ जाएगी।हरपालजीको निश्चय हो गया कि यह मालदार बहुत है लेकिन आज तक इसने कोई अच्छा काम किया ही नहीं। ऐसे आदमी का धन तो सेवा में लग जाए तो बहुत अच्छा है। तो बीच जंगल में ले जाकर उन्होंने अपना साफा खोला और बिछा दिया रास्ते में धरती पर और सेठ को धमकाते हुए भक्तराज बोले- एक कदम भी यहाँ से आगे बढ़ाया तो ठीक नहीं होगा। रुक जाओ और सारा धन इस पर रख दो। भगवान तो नाटक कर थर-थर कांपने लगे, सारा माल रख दिया साफे पर और चतुर्भुज रूपमें प्रकट हो गये। हरपालजी भगवान के चरणों में गिर गये और क्षमा मांगने लगे- प्रभु मैंने बहुत बड़ी दुष्टता की। आपको ही लूट लिया मैंने।

भगवान ने कहा यह अक्षय संपत्ति ले जाओ, खूब सेवा करो। यह कभी समाप्त नहीं होगी। प्रभु जाने लगे तो हरपालजी ने प्रार्थना की- मेरी धर्म पत्नी को भी दर्शन देने घर चलना होगा। फिर प्रभु हरपालजी के घर पधारे। प्रभु ने हरपालजी की धर्म पत्नी और घर पर पधारे हुए समस्त साधु संतों को चतुर्भुज रूप में दर्शन देकर कृतार्थ किया। बोलिये भक्तवत्सल भगवान की

गीता ज्ञान

पू.परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानन्द जी महाराज

..... पिछले अंक से आगे

फिर वह देखता है कि अन्य गायों की तरह वह भी वहाँ खड़ी चारा चरने लगी, फिर बैठकर जुगाली करने लगी जैसे बंधी हुई है। सभी सो गई वह भी सो गई। फिर गुरु जी आए बोले बेटा क्या देखा। महाराजजी गाय बहुत भोली है समझती नहीं कुछ। क्या नहीं समझती? क्या देखा आपने ऐसा? गुरुजी मैंने इसको बांधा भी नहीं है रस्सी से, केवल बांधने का अभिनय किया फिर भी यह समझ रही है कि मुझे बांध दिया है। बेटा! यह तुमको सिखाने के लिए मैंने ही नाटक रचा था। उसकी रस्सी थी उसको मैंने ही अलग रख दिया था। ऐसे ही हम सब भी मुक्त हैं लेकिन अनुभव नहीं करने के कारण अपने को बंधन में समझते हैं।

मनोबुद्ध्यहङ्कार चित्तानि नाहं
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे ।
न च व्योम भूमिर्न तेजो न वायुः
चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्।।

न तो मैं मन हूं, न बुद्धि या अहंकार, न मैं सुनने (कान), न चखने (जीभ), सूंघने (नाक) या देखने (आंखें) इंद्रियां हूं, न मैं आकाश हूं, न पृथ्वी, न अग्नि और न वायु, मैं सदैव शुद्ध आनंदमय चेतना हूं, मैं शिव हूं, मैं शिव हूं।

हम सब शुद्ध आत्मस्वरूप शिव हैं, जीव नहीं हैं। हम सब मुक्त हैं लेकिन अनुभव नहीं कर रहे हैं और बंधन में पड़ जाते हैं। तुम्हें सिखाने के लिये यह सब मैंने किया था।

हम यह अर्जुन की व्याख्याा कर रहे हैं। अर्जुन शब्द का अर्थ होता है मुक्त होते हुए भी बंधन में पड़े रहना। क्या करूं मैं तो फस गया हूँ। क्या करूं ऐसा हो गया है क्या करूं वैसा हो गया है। कुछ नहीं हुआ है सब नाटक है नाटक करो अभी ना करो सही करो लेकिन याद रखो कि मैं आत्म स्वरूप हूं।

जब मैं छोटा था तो मुझे एक बार एक अभिनय करने को मिला राधाजी का। 12 13 साल का रहा होगा मैं। मुझे साड़ी पहना दी गई और मैं छोटी राधिका बन गया। लेकिन भीतर में तो मुझे पता था कि मैं कौन हूँ परंतु जब अभिनय की बारी आती, नाटक करना होता तो मैं राधाजी की तरह ही चलता, नाचता सब व्यवहार करता। तो संसार अभिनय है हमारा जो स्वरूप हैं वह सच्चा स्वरूप हैं। हम नाटक करते हैं तो भूल जाते हैं और उसको असली समझकर रोने हंसने लग जाते हैं, नाटक के पात्रों में मोह कर लेते हैं, नाटक की वस्तुओं को अपनी समझ लेते हैं। यह संसार नाटक करने के लिये मिला है, इससे मोह मत करो, इसको अपना करके मत मानो। यह सब नाटक करने के लिये मिले हैं तो इनका उपयोग अच्छी तरह से नाटक करने में करना है।

अर्जुन अग्नि तत्व है और इसका स्थान नाभि में है। अब बाकी दोनों भाइयों का विश्लेषण करते हैं। नकुल मतलब क्या? मेरे पूज्य गुरुदेव भगवान कहते थे कि कुल का मतलब नदी का जो किनारा होता है उसको कुल, उपकुल आदि बोलते हैं। जिसका कोई किनारा नहीं हो वो नकुल। जब नदी में बाढ़ आ जाती है तो पानी चारों तरफ फैल जाता है वो नकुल। व्यक्ति के मन में जब काम वासना आ जाती है तो वह सब कुछ भूल जाता है। वह व्यक्ति काम में अंधा हो जाता है। वह इधर-उधर सब तरफ मन को ले जाता है। वह नकुल है।नकुल स्वाधिष्ठान चक्र में जड़ तत्व है।

देखिए जल ही जीवन है। स्वाधिष्ठान चक्र जल तत्व है। सृष्टि में जहाँ जल नहीं है वहाँ जीवन नहीं है। जल में दो अक्षर है ज और ल। ज का मतलब जन्म और ल का मतलब नाश। जहाँ जल

सामान्य है वहाँ जीवन है और जहाँ जल अति है वहाँ नाश करता है।

जल एक सम्पदा है। जल का उपयोग करो, दुरूपयोग मत करो। जल को लेकर देश में कई राज्यों में विवाद चल रहा है। नदियों के जल के बंटवारे को लेकर राज्यों में विवाद है। आज जो हम जल को भूमि से खींचकर निकाल रहे हैं वो करोड़ों वर्षो का संग्रह किया हुआ है। इस जल का पुनर्भरण नहीं करेंगे तो आने वाली पीढ़ियों को भूमिगत जल नहीं मिलेगा। अपने दैनिक जीवन में जल का उपयोग बहुत ही मितव्ययता से करना चाहिए। जल की एक-एक बूंद कीमती है। जल ही जीवन है। जल नष्ट करोगे तो जीवन नष्ट हो जाएगा। जल के बिना जीवन संभव नहीं है।

जितना भूजल उपयोग कर रहे हो उतना पुनर्भरण भी करो ताकि धरती के गर्भ में जल का भंडार कम नहीं हो। आजकल जल को लेकर एक और संकट आ गया है। या तो वर्षात होती नहीं है या बहुत अधिक हो जाती है। एक साथ भारी बारिश होकर पानी बह जाता है, लोगों को डूबो देता है। कभी ऐसा होता है कि कम समय में ही पूरे वर्षभर में जितना पानी बरसना चाहिये उतना बरस जाता है। बाकी समय में सूखा रहता है, पानी के लिये तरसते हैं। इस तरह जल का संरक्षण नहीं हो पाता है।

सहदेव कहाँ है? मूलाधार चक्र में। मूलाधार चक्र भूवाचक हैं। इस चक्र में पृथ्वी, मिट्टी तत्व है। मिट्टी के ऊपर देवता आकर खेलते हैं। मिटटी के ऊपर आप मकान बनाओ, जो कुछ भी करो, मिट्टी के ऊपर ही सब खेल है। खेती करो, वह सब सहन करती है। ऐसे ही सहदेव है।

आज्ञा चक्र में भगवान श्री कृष्ण है और शरीर के पांच चक्र में पांच पांडव है। यह शरीर एक रक्ष है। भगवान श्री कृष्ण आत्मा रूप से इसमें सारथी बनकर बैठे हैं। कठोपनिषद में एक श्लोक है- **आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु। बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च।।** आत्मा को रथी जानो, शरीर को रथ, आत्मा को सारथी और मन को लगाम। भगवत गीता में जो दृष्टांन्त दिया गया है उसमें आत्मा है रथी और शरीर है रथ। भगवान इस शरीर रूपी रथ के सारथी हैं। हमारे जीवन रथ को सारथी बनाकर चलाने के लिये भगवान को प्रार्थना करें कि मेरे जीवन रथ को आप चलाएं। भगवान से प्रार्थना करें- हे मेरे प्रिय प्रभु! मेरे शरीर रूपी इस रथ को धर्म की राह पर, सत्य की राह पर, ज्ञान की राह पर, कर्म की राह पर, मुक्ति की राह पर, भक्ति की राह पर आप चलाएं। मैं आपकी संतान हूँ आप मेरी माँ हो, माँ जैसे संतान को गोद में बैठाकर उसका पूरा ध्यान रखती है ऐसे ही मेरे शरीर रूपी रक्ष को आप संभाल कर चलाएं।

संस्कृत में एक शब्द है वृत। कल्पना कीजिये कि हम एक तालाब के पास खड़े हैं और एक छोटा सा पत्थर लेकर तालाब में फेंक दिया। तालाब में पत्थर फेंकने से पानी में वृताकार तरंगें उठती है और वे धीरे-धीरे तालाब के किनारे की ओर बढ़ती है और एक-एक करके समाप्त हो जाती है। एक पत्थर का छोटा टुकड़ा शांत जल में तरंगें अर्थात वृति पैदा कर देता है। एक वृति शब्द से दो शब्द बनते है। एक प्रवृति और दूसरा निवृति। इसी तरह से दो शब्द है सकारात्मक और नकारात्मक। कौरव प्रवृति है व नकारात्मक हैं और पांडव निवृति है और सकारात्मक हैं। पांडव भगवान श्रीकृष्ण को मानते हैं, भगवान श्रीकृष्ण का अनुसरण करते हैं। जो श्रीकृष्ण का अनुसरण करते हैं वे निवृति के मार्ग पर चलते हैं। कौरव नकारात्मक हैं और पांडव सकारात्मक। हरेक का जीवन प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों को लेकर चलता है। जैसे बिजली के तार में दो तत्व है- एक ऋणात्मक और दूसरा धनात्मक ऐसे ही हमारे जीवन में भी ऋणात्मक और धनात्मक दो एनर्जी है।

कल हमने विचार किया कि जो कौरव लोग हैं वे मनोवृति हैं और जो पांडव लोग हैं वे बुद्धिवृति हैं। मन के प्रवृत्ति होती है और बुद्धि के निवृति होती है। पांडव लोग भगवान कृष्ण का अनुसरण करने वाले हैं। जो भगवान का अनुसरण करने वाले होते हैं, भगवान को गुरु मानने वाले होते हैं, वे निवृत्ति की राह पर, निवृत्ति के रास्ते पर चलते हैं और जो संसार का अनुसरण करते हैं, इकट्ठा करने वाले होते हैं, संचय करने वाले होते हैं वे प्रवृति के मार्ग पर चलने वाले होते हैं। योग शास्त्र के अनुसार जब हमारी चेतना अधोमुखी होती है तब हम प्रवृती के मार्ग पर चलते हैं और जब हमारी चेतना उर्ध्वमुखी होती है तब हम निवृत्ति के मार्ग पर चलते हैं। प्रवृत्तियां और निवृत्तियों के बीच में युद्ध चल रहा है संघर्ष चल रहा है।

हम भगवत गीता पर सामालोचना कर रहे हैं। भगवत गीता यह केवल शास्त्र नहीं है यह हमारा सभी के जीवन की कहानी है। हमारे भीतर प्रवृति है और निवृत्ति है और दोनों के बीच में लड़ाई है। इस लड़ाई में क्या होता है? इसके लिए हम भगवत गीता के प्रथम श्लोक की समालोचना करते हैं।

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चौव किमकुर्वत संजय।।

इसका अर्थ है: धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में, युद्ध की इच्छा से एकत्र हुए, मेरे और पांडु के पुत्रों ने, क्या किया, हे संजय?

संत कहते हैं कि जिस क्षेत्र में जाते हैं, उसका प्रभाव हमारे शरीर, मन और जीवन पर पड़ता है। जहां युद्ध करने के लिये गये हैं। जहां युद्ध करने के लिये सब एकत्रित हुए हैं वह एक पवित्र क्षेत्र है। धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र पर विचार कर लें। इस क्षेत्र का पुराना नाम समंत पंचक। ये शब्द बहुत प्यारे हैं। हमारे संस्कृत वांगम्य में 50 अक्षर होते हैं। हर अक्षर का अर्थ है और अक्षरों से मिलकर बनने वाले शब्दों के भी अर्थ होता है। जैसे वर्णमाला का पहला अक्षर 'अ' और अंतिम अक्षर 'क्ष' और दोनों मिलकर बना है अक्ष। जिसके चारों और घूमे वो अक्ष। समंत पंचक का भी अर्थ है। समंत का मतलब जिसका सम्यक अन्त होता हो। पंचक शब्द का अर्थ है पांच का समूह। कुरुक्षेत्र का प्राचीन नाम समंतपंचक इसलिये पड़ा कि यहां पांच झीलें थी। समंतपंचक हमारे इंद्रियों के समूह को भी कहते हैं।

भगवान ने पांच इंद्रियों हमारे उत्थान के लिये दी, पतन के लिये नहीं। भगवान ने आंखें दी है तो किसी की सुन्दरता की ओर आकर्षित होने के लिये नहीं, उस सुन्दरता के पीछे उसको बनाने वाले के दर्शन करने के लिये दी है। भगवान ने कान दिये हैं तो परनिंदा, गन्दी बातें सुनने के लिये नहीं दिये हैं बल्कि भगवान का नाम सुनने के लिये, सतसंग सुनने के लिये, अच्छी बातें सुनने के लिये दिये हैं। मुख (जीभ) दिया है अच्छी बातें बोलने के लिये, भगवान के नाम का उच्चारण करने के लिये, शास्त्र की बातें बोलने के लिये, विभिन्न स्वाद चखने के लिये दिया है लेकिन भोग के लिये नहीं स्वास्थ्य के लिये स्वाद का पता लगाने के लिये दी है। भगवान ने नासिका दी है अच्छी सुगन्ध बुरी सुगंध का भेद करने के लिये ताकि भगवान को सुगंधित पदार्थो का ही भोग लगे, नाक श्वास लेने के लिये दी है, आंतरिक चेतना जगाने के लिये दी है। त्वचा रूपी इंद्री दी है भगवान का आलिंगन कर विलक्षण आनन्द की अनुभूति करने के लिये, संसार के भोग भोगने के लिये नहीं, शरीर निर्वाह हेतु ठण्डे-गर्म का पता करने के लिये है त्वचा इंद्री। इंद्रियों का संयम करके मनुष्य ईश्वर की ओर यात्रा कर सकता है, इंद्रियों के भोगों में रत रहकर मनुष्य अधोगति को प्राप्त होता है।

व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य होता है आत्म विकास के साथ राष्ट्र और ब्रह्माण्ड की पुष्टि, समद्धि के लिये काम करना ....शेष अगले अंक में

श्री राम कथा

पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज

परमानंदकंद आनंदकंद परात्पर प्रभु श्री राघव, तीर्थ में विराजित ऋषिमुनि संतवृंद, आह्वानित पूजित देवगण, ऋषिगण, पितृगण, पूज्या माताओं, बहनों, बालकों, पुण्य पवित्र सलीला भागीरथी मां गंगा, पावन ऋषिकेश धाम में अनादि काल से तपते हुए साधक और सिद्धि का सुख प्राप्त करते हुए पूर्व मनुष्यों को पुनः पुनः वंदन करते हुए, सज्जनवृंद, भगवत भक्त मानस प्रेमीजन गंगा जी के इस पावन पवित्र तट पर उनकी गोद में बैठकर हम सब पावन भागीरथी जल सदृश श्रीरामकथा रसधारा में आप्लावित होने का संकल्प इस समय कर चुके हैं। हम सब पावन श्रीराम कथा का श्रवण करेंगे।

9 दिवसीय इस सत्र में आत्म लाभ की बातें श्री रामचरित मानस जी के माध्यम से करेंगे। हे हरि भक्तों यह ग्रंथ केवल ग्रंथ नहीं, चलता फिरता वैकुंठ है। जो अपने हाथ में यह पोथी और वैकुंठ लेकर घूम रहे हैं उनके जीवन में कुंठा कैसी, उनके जीवन में वेदना कैसी, जिनके हाथ में श्री रामचरितमानस जी हो, जिनके अवलंब मानस जी बन गए हो, जिनके आधार मानस जी हो, जिनका जीवन मानसमय हो गया हो उनको तरने की फिर चिंता कैसी, उनका तरना सिद्ध हो चुका है जिन्होंने मानसजी को स्वीकार किया है अपनाया है।

रामायण सुर तरु की छाया, भये दुःख दूर निकट जो आया। कल्पवृक्ष के पास जाकर हम कहां मांगते हैं, वह तो बिना मांगे ही सिद्धि देता है। कल्पवृक्ष तो क्या एक साधारण वृक्ष भी अपने पास आये हुए आश्रितों को स्वाभाविक ही छाया, फल, फूल आदि प्रदान करता है तो यह तो रामायण है, श्री रामजी का नित्य निवास, श्री रामजी का चलता फिरता साकेत है। रामजी इसमें सर्वांग विराजित है। भगवान श्रीरामजी की अहेतुकि कृपा से हम सबको श्री रामचरितमानस का सत्संग सत्र प्राप्त हुआ है।

जब द्रवे दीन दयाल राघव साधु संगति पाईये।

भगवान हमारे ऊपर जो कपा करते हैं वह अहेतुकि कृपा करते हैं। हेतुकि और अहेतुकि कृपा में भेद क्या है? जगत का हर उपकार हेतु से होता है। हम जहां भी जाते हैं, मिलते हैं, करते हैं उन सब में कोई न कोई हेतु छुपा हुआ होता है। वह हेतु चाह रखने वाले और देने वाले दोनों के बीच की बात है, पर परमात्मा जीव के प्रति जो आल्हादित है, आग्रही है, जो कृपालु है, उनमें भगवान हमसे कुछ नहीं चाहते हैं, भगवान का उसमें कोई हेतु नहीं है।

भगवान हमसे कुछ भी नहीं चाहते और हमारे दिए से भगवान का कोई भी पक्ष पुष्ट भी नहीं होगा। भगवान सूर्य नारायण अनंत ऊर्जा के स्रोत हैं, उनमें अनंत रश्मियों भरी है। इतने में एक हमारा दीपक उनको कितना पोषण देगा? लेकिन उनमें हमारी श्रद्धा जो है, हमारी कृतज्ञता जो है कि भगवान सूर्यनारायण हमको कितना प्रकाश देते हैं, हमारे लिए कितने उपकारी हैं, उनके प्रकाश में हमारा जीवनयापन हो रहा है तो उपकार की भावना से, श्रद्धा की भावना से समय पर उनको हम एक दीपक दान करें। श्री गंगा जी में हम स्नान करते हैं, अनंता अनंत काल से, अनंतानंत जन्मों से, अनंतानंत जीवों को जिन्होंने कृतार्थ किया है, भक्ति प्रदान की है, इन गंगाजी को भला हम क्या समर्पण कर सकेंगे पर गंगा जी से ही अंजलि भरकर गंगा जी को ही समर्पित कर देते हैं हे मां गंगे हमारी अंजलि स्वीकार करो। गंगाजी को हमारे द्वारा दी गई अंजलि से कोई पोषण और वरदान नहीं हो रहा है परंतु श्रद्धा की भावना से अपनी कृज्ञता उनको अर्पण करते हैं कि मां आपने अपनाया है हमें। कितनी दिव्या है मां गंगा,

बड़भागी है वे जीव जिनको गंगाजी के दर्शन और उनके पावन तट पर एक क्षण विश्राम का अवसर मिला है।

यह पावन धाम तो सदियों से, शताब्दिक वर्षो से, परंपरा से है वैसे तो अनादि वर्षो से यहां सिद्धों, महर्षियों का, मनुष्यों का तपस्वियों का पवित्र स्थान रहा है ध्रुव काल से यहां चेतनामयी भूमि जीवन को अनंत सुख प्रदान करती है, यहां आने वाला जीव कृतार्थ हो जाता है।

देखिए करने के लिए तो बहुत छोटे से काल की आवश्यकता है, 100 वर्ष की आयु को अगर हम उपासना में लगा दें तो उसके मूल्य का आंकलन तो शायद विधाता भी नहीं कर पाए, उनके माप तोल से हमारे लाभ शायद अधिक होंगे, वे आंकलन नहीं कर सकते। गंगाजी के तट का पल भर का विश्राम तो हमारे मोक्ष में संपूर्ण बल देने वाला है 7 दिन, 9 दिन तो बहुत बड़ी बात है। इस आधार पर गंगा के तट पर एक पल भी हम गंगा की लहरों को खड़े होकर देखते हैं, दावा अगर रख दें तो यम की संपूर्ण व्यवस्था वहां पर कुंठित होगी, विधाता मौन होंगे और जीव के लिये गोविंद का द्वार खुल जाएगा। आदि शंकराचार्य जी भगवान ने क्या कहा था- भज गोविन्दम, भज गोविन्दम, गोविन्दम भज मूढ़मते।

जो गीता भवन में हम लोग इस समय आश्रय प्राप्त किए हैं, यहां हमारी परंपरा के मनीषियों ने मानव मात्र के आश्रय के लिए इस स्थान की व्यवस्था की है, यह साधन धाम है, यह मुक्ति का धाम है साधकों के लिए परम आश्रय है, जो जीव 2 दिन, 7 दिन यहां रहकर साधना कर रहे हैं उनके भाग्य की तुलना नहीं की जा सकती। यहां तो जीवन भर हमारे प्यारे-प्यारे मोक्षकामी जीव रहकर उपासना कर रहे हैं। हे हरि भक्तों गीताजी की महिमा कैसी है, गीता भवन के अंग-अंग में मंत्र लिखे हुए हैं। केवल गीता भवन की दीवारों को पढ़ लिया जाए तो भी कल्याण निश्चित है। बोलिए भक्तवत्सल भगवान की जय। गीता प्रेस की समृद्धि जो हमको सत् साहित्य और पुस्तकों के रूप में प्राप्त है उसको पढ़ लें अगर तो जीव के कल्याण की बात का कहना ही क्या है। गीता भवन की दीवार पर मनिषियों के लिखे हुए वाक्यों का यदि स्मरण कर लिया जाए, हृदयंगम कर लिया जाए, दोहरा-तेहरा लिया जाए तो इतने में विश्वास है हम तर जाएंगे, इतनी बढ़िया व्यवस्था हमारी है यहां की। सज्जनों यहां विराजे हुए कई मनीषी पूरी गीता रोज प्रतिदिन स्वाध्याय करने वाले हैं, पूरी की पूरी गीता पढ़ने वाले मनीष यहां पर विद्यमान हैं यहां पर। नित्य 18 अध्याय का स्वाध्याय करते हैं, हृदयगम कर चुके हैं, अपने अंतःकरण में उतार चुके हैं, पर गीता की महिमा संपूर्ण नहीं एक कणिका में छिपी हुई है।

भगवान शंकर जी ने कहा है कि- भगवत गीता किंचित गीता, पूरी गीता पढ़ने वालों का पुण्य विधाता नहीं गा पायेंगे कि कितना होगा? हां किंचित गीता, एक श्लोक जिन्होंने दैनिक नियमों में रख लिया हो, आधे श्लोक का नित्य पाठ करते हों, चौथा भाग गीताजी के किसी श्लोक का नित्य पाठ करते हैं वो तर गये, तर जायेंगे नहीं, तर गये हैं। भगवत गीता किंचित गीता, गीताजी का एक श्लोक तो बहुत बड़ा होगा, आधा कहें तो भी क्या, यहां चौथाई भी नहीं, अक्षरमात्र से जीव का कल्याण होगा। किंचित में चतुर्थांश भी नहीं आयेगा, और छोटा जितना कर सकते हैं श्लोक को उतने के स्मरण से जीव कल्याण को प्राप्त कर ले। साथ ही कहा गंगाजल लव कणिका पीता, लव कणिका पीता। यहां लव और कणिका दोनों है। लव और कणिका में अंतर है। लव काल का एक हिस्सा है जो बहुत छोटा गिना गया है। एक बूंद जल को छिटका दिया जाये और उससे जो जल के छोटे-छोटे भाग होते हैं उसका जो हजारवां भाग है उसको कणिका कहा गया है। एक

बूंद गंगाजल पीने वालों की बात हम नहीं करते, एक बूंद के हजारवां हिस्सा भी किसी जीव की जीव्हा पर आ जाय तो वह जीव भी तरने का अधिकारी हो जाता है। ऐसी भागीरथी गंगा, भगवती मानस गाथा और गीता का पावन निवास और दिव्य समन्वय में आज हम भगवान की लीला कथा आरम्भ करते हैं।

जिस महापुरुष ने, जिस लोक नायक ने, श्रीमदगोस्वामी तुलसीदासजी महाराज ने, विश्व ब्रह्माण्ड के गुरु श्रीतुलसीदासजी ने लोक हितार्थ पवन पावनी माँ गंगा की भांति श्रीराम कथा का गायन किया

चली सुभग कबिता सरिता सो:
राम बिमल जस जल भरित सो:
सरजू नाम सुमंगल मूला:
लोक बेद मत मंजुल कूला:

रामचरित मानस सुंदर कविता रूपी नदी बह निकली, जिसमें श्री रामजी का निर्मल यश रूपी जल भरा है। इस (कवितारूपिणी नदी) का नाम सरयू है, जो संपूर्ण सुंदर मंगलों की जड़ है। लोकमत और वेदमत इसके दो सुंदर किनारे हैं। तो प्रभु श्रीराम की नदी रूपी पावन कथा में प्रवाहित होने का हम सबको सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

हरि भक्तों हम सब अनुकूलता का विचार कर रहे हैं। अनुकूलता का भोग करने वाले कई बार अपने उद्देश्य में विफल हो जाते हैं लेकिन प्रतिकूलता जीवन में अनेकों बार नहीं, बार-बार सफलता ही सफलता देती है। चूंकि विफलता प्रतिकूलता में खोज है, अन्वेषण है, चिन्तन है, लक्ष्य है जबकि अनुकूलता में कुण्ठा है, शिथिलता है। जहाँ-जहाँ अनुकूलता है, सफलता है वहाँ-वहाँ लोग अपने को शिथिल कर देते हैं, लक्ष्य प्राप्ति का प्रयास जारी नहीं रखते हैं, तृप्त हो जाते हैं, पर जहाँ प्रतिकूलता है, असफलता में, संघर्ष है वहाँ विराम नहीं होता है, वहाँ नई खोज होती है, प्राप्तव्य के लिये प्रयास होता है। इसलिये जितने सूरमा, जितने मनिषी ......*शेष अगले अंक मे*

कविता

श्री गोवर्धननाथजी नमः

म्हारे आया रे आया आया, श्री गोवर्धननाथजी आया।
आप नंदगाँव में आया, संग मीराजी ने लाया।।
म्हारे आया रे आया.........................
वृंदावन में गोऋषिजी को, पहलो दर्शन दीनो।
पत्थर सिला बन प्रकट्या ये तो, सबने अचरज कीन्हो।।
हल्का-भारी छोटा-मोटा, बनकर स्वरूप दिखाया {1}
म्हारे आया रे आया.........................
नाथदारा में श्रीनाथजी ने, नंदगाँव में गोवर्धननाथजी।
बड़ा स्वरूप श्रीनाथजी ने, छोटा गोवर्धननाथजी।।
नंदगांव बना नव ब्रजमंडल, मंगल उत्सव छाया {2}
म्हारे आया रे आया.........................
सुबह शाम पूजा आरती होवे, षष्ठ बार भोग लागे।
गोवर्धननाथजी को माखन मिश्री प्यारो घणो लागे।
भक्तजन प्रसाद पावे, हृदय में आनंद आया {3}
म्हारे आया रे आया.........................
गोवर्धननाथजी आया ये अभिनव व्रज हरसाया।
ग्वालबाल ने गोसेवा में, उत्साह उमंग दिखाया।।
गोमाता अति प्रसन्न हुई, गोवत्स मन मुस्काया {4}
म्हारे आया रे आया.........................
गोवर्धननाथजी गोपाल बनकर, गोचारण को जावे।
नंदगाँव, बरसावा, गोकुल, वृंदावन हरसावे।।
धर्माचार्य में रास रचावे, भक्त मंडल मन भाया {5}
म्हारे आया रे आया.........................
गोवर्धननाथ जी को गोसेवा के, कारज रोज सुनाते।
गोमाता को साक्षी रखकर, अपना संकल्प दोहराते।।
पथमेड़ा गोऋषि जी के यह, बाल सखा बन आया। {6}
म्हारे आया रे आया......................
म्हारे आया रे आया आया, श्री गोवर्धननाथजी आया।
आप नंदगाँव में आया, संग मीराजी ने लाया।।
म्हारे आया रे आया.........................

– गोसेवक श्री धनराज जी चौधरी

युवाओं के साथ मन की बात
(पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

.......पिछले अंक से आगे

एक प्रश्न आया है कि दूसरों की प्रसन्नता हेतु जीवन जीना उचित है क्या ? क्या यही जीवन है?

मैं कभी भी आपको यह सलाह नहीं दूंगा कि आप अपनी प्रसन्नता गंवा कर दूसरे को खुश करें, दूसरों को प्रसन्न करें। आपका प्रश्न यह है कि दूसरों को खुश करते रहना, दूसरों की प्रसन्नता का ध्यान रखना क्या यही जीवन है तो मैं आपको यह जरूर कहूंगा कि दूसरों को प्रसन्न करते रहना और स्वयं की प्रसन्नता का ध्यान नहीं रखना यह तो जीवन नहीं है, लेकिन दूसरों को प्रसन्न करने में स्वयं को भी प्रसन्नता हो यह जरूर जीवन है। दूसरों की प्रसन्नता में अपनी प्रसन्नता हो यह जीवन है। दूसरों के दुःख से दुःखी होना और दूसरों के सुख में सुखी होना यह मानवता के लक्षण है।

किसी ने प्रश्न किया है हमारा भविष्य अगर पहले से निश्चित है तो भगवान हमसे अच्छे कर्म क्यों नहीं करवाते? अच्छे काम तो खुद ही आकर करते हैं और बाकी सब चिटर-पुटर काम हमसे करवाते हैं और हमको पापी और बनाते हैं।

कर्मो की गति बहुत सूक्ष्म है। इसको इतना आसानी से नहीं समझ सकते। बड़े रूप में यों समझें कि कर्म करने के लिये मनुष्य स्वतंत्र है। हमारे मन में बहुत प्रकार की कामनाएं भरी पड़ी है। साधारण मनुष्य उन कामनाओं के वश होकर कर्म करता है। हम चाहें तो अपने सामर्थ्य अनुसार अच्छे से अच्छा कर्म कर सकते हैं। लेकिन उनका फल हमारे हाथ में नहीं है। फल ईश्वर देता है। इस कारण हमारे द्वारा पूर्व में किये गये अच्छे-बुरे कर्मो का फल ही तो किस्मत है। जो कार्य आवश्यक है, मनुष्यके सामर्थ्य में नहीं है वे सब ईश्वर करते हैं। वास्तव में तो ईश्वर कर्म नहीं करते लीला करते हैं। (हास्य) मैं ठाकुर जी से चर्चा करके बताऊंगा।

एक युवा का प्रश्न आया है कि एक व्यक्ति से मेरा तो बहुत लगाव है, मैं तो उनसे बहुत प्रेम करता हूँ लेकिन वे मुझसे प्रेम नहीं करते, मुझे कुछ नहीं समझते। अब मैं क्या करूं। बार-बार मुझे वो ही वो याद आती है।

देखो भाई एक विद्यार्थी को ऐसी बातों में कभी नहीं पड़ना चाहिए। किसी भी व्यक्ति को आपके दिमाग पर और दिल पर हावी होने का मौका विद्यार्थी काल में तो कम से कम मत दीजिए। विद्यार्थी हो आप और जो आपको हासिल करना है वह ऐसी बातों में पड़ने से हासिल नहीं होगा, यात्रा रुक जाएगी। विद्यार्थी काल को अच्छे से बीत जाने दीजिए, फिर देखा जाएगा। क्योंकि यह हमारा लगाव हो गया कि वह हमसे अब वैसा प्रेम नहीं करते। व्यर्थ का तनाव लेकर हम अपनी पढ़ाई में व्यवधान ला रहे हैं, ध्यान को भटका रहे हैं।

प्रेम और मित्रता की परिभाषा भी कोई अलग ही दिशा में चली गई। वर्तमान में यह कितना विकृत रूप ले चुकी है। दो लड़कों की या दो लड़कियों की आपस में मित्रता या प्रेम सामाजिक और व्यावहारिक है। लेकिन एक लड़का और एक लड़की की मित्रता के क्या मायने हैं? कई लोग कहते हैं कि श्री कृष्ण और द्रौपदी भी मित्र थे। कई लोग ऐसा बोलते हैं कि द्रौपदी श्री कृष्ण की सखी थी, सहेली थी, लेकिन कभी आपने उन दोनों के संबंधों को देखा और समझा है? उसमें क्या था, उनकी दोस्ती का रूप क्या था? क्या आज के लड़के-लड़कियों की तरह वे बगीचों में घूमने जाते थे? क्या वे ऐसे साथ में फोटोग्राफी करते थे? क्या वैसे बगीचे में जाकर अकेले बैठते थे पेड़ों के नीचे? नहीं, द्रौपदी हमेशा यह ध्यान रखती थी कि श्री कृष्ण को जो प्रिय है, श्री कृष्ण जो बात

कहते हैं उस बात को मैं अपने जीवन में स्वीकार करूं और श्रीकृष्ण हमेशा इस बात का ध्यान रखते थे कि द्रौपदी के जीवन में कोई तकलीफ आए तो मैं सबसे पहले उसकी रक्षा करने के लिए जाऊं। अगर एक लड़का-लड़की में मित्रता हो तो मित्रता में सिर्फ इतना व्यवहार होना चाहिए कि अगर लड़की को जीवन में कोई तकलीफ आए तो लड़का उसकी जरुर मदद करे और लड़के के जीवन में कोई तकलीफ आये तो लड़की उसकी जरूर सहायता करे और यूं ही घर जाकर बैठ जाओ कि आंटी पिंकी कहाँ है या मोनू कहाँ है, यह ठीक नहीं है।

आप कहो कि महाराज पुराने विचारों के हैं, जमाना कहाँ से कहाँ चला गया, क्या-क्या हो गया? भैया देखो जमाना कहाँ गया है? गंगा जी में वही गंगाजल है, हिमालय पर्वत वही है, चांद-सूरज वही है। कुछ नई गाड़ियां आ गई, कुछ नए मोबाइल ले लिए, कुछ नई टेक्निक आ गई। इससे क्या होता है? इससे जिंदगी के मायने बदल नहीं जाते हैं। रामजी के त्रेता युग में, कृष्ण के द्वापर युग में, सतयुग में, हर युग में जिंदगी के जो मायने हैं, वे मायने अभी भी वैसे ही है। इसलिये भैया कुछ सुविधाओं के, कुछ वस्तुओं के बदलने का यह मतलब थोड़े ही होता है कि हम कुछ भी करने लग जाएं, हम मनमाना आचरण करने लग जाएं, हम सामाजिक मर्यादाओं को तोड़ दें।

विद्यार्थी जीवन में फालतू की मित्रता के चक्कर में भावनाओं में बहकर अपना अमूल्य समय खराब न करें, अपने केरियर को बर्बाद न करें, जीवन बहुत लम्बा है और बहुत कुछ हासिल करना अभी बाकी है। अभी तो जीवन की शुरूआत हुई है। अभी से रिश्तों के चक्कर में उदास हो गये, फूल अभी से मुरझा गया तो फल कैसे लगेंगे? जवानी तो एकदम खिला हुआ फूल है भैया। आप अपने परिवार को भी नहीं महका पाये और मुरझा गये, मोहल्ले को नहीं महका पाये उससे पहले ही मुरझा जाएं, एक फूल ने दो लोगों को भी खुशबू नहीं दी तो क्या मिला जवानी से? एक के चक्कर में उदास हो गये मुरझा गये? वो मुझे महत्व नहीं दे रहे, वो मुझसे नाराज है, यह क्या चीज है, कुछ भी नहीं है। इसलिए थोड़ा सा इन सब चीजों से कृपा करके बच के रहना चाहिए और मित्रता उद्देश्य सहित होनी चाहिये और स्थाई होनी चाहिये, सिर्फ भावनाओं आधारित नहीं।

एक बहन ने पूछा है कि परिणाम के भय से तैयारी के बावजूद चिंता बनी रहती है।

हाँ भाई सही बात है। अपने प्रयासों पर भरोसा करो भाई परिणाम तो अच्छा ही आता है। अपने प्रयासों पर यकीन रखो। कितनी गलत बात है कि आपके 8-10 सवालों के उत्तर पर जो परिणाम आएंगे उस परिणाम को लेकर आप इतने परेशान हैं और साल भर आपने जो प्रयास किया है उसकी तरफ ध्यान ही नहीं है। उसकी आप उपेक्षा कर रहे हो। केवल थोड़े से प्रश्नों के उत्तर पर आधारित परिणाम के लिये इतने चिंतित कि क्या होगा, क्या होगा, क्या होगा? पहले तो किसी भी कार्य को पूरा करने के लिये पूरे प्रयास करें, फिर अपने प्रयासों पर हमेशा भरोसा रखें। यह भागवत कथा हो रही है, समिति के इतने सारे लोग हैं, इन्होंने प्रयास किये होंगे कि नहीं?

इनको अपने प्रयासों पर पूरा भरोसा था तब तो इतना बड़ा पंडाल लगाया यहाँ पर आपके लिए और बहुत बढ़िया अल्पाहार की व्यवस्था की है आपके लिये। अभी 8.00 बजे का समय था और 8.00 बजे तक सिर्फ 40 बच्चे ही आए थे, जबकि कितने लोगों के फॉर्म आए हुए हैं, कितने लोगों के सवाल आए हुए हैं ऑनलाइन। इतने लोग लगे हुए हैं, आपके अनुसार सोचते तो ये हताश हो जाते और यह सब कार्यक्रम निरस्त कर देते? यह सब तो आप सोचो कि फिर तो एक बार को तो लगा होगा कि यह फिर कौन खाएगा बनाया हुआ अल्पाहार? लेकिन फिर भी यहाँ से पूरी व्यवस्था बनाई गई है। यहाँ कैमरे वालों को बुलाया गया, ये म्यूजिक वाले भी बेचारे सर्दी में

बैठे हैं। यह सब क्यों? एक बार को तो निराश हो जाते, बंद कर देते यह सब, भाई कैंसिल करो कोई आया ही नहीं 8.30 तक भी इतने जने नहीं थे। लेकिन यह सब क्यों किया गया? क्योंकि प्रयासों पर भरोसा था। कथा में हजारों लोग आयेंगे पर किसी ने फार्म थोड़े ही भरे हैं। कथा की व्यवस्था करने वाले बताओ भैया कि आप लोगों ने किस विश्वास पर, किस आधार पर इतना बड़ा पंडाल लगाया भाई। केवल एक ही आधार, प्रयास पर भरोसा था। तो प्रयास का परिणाम कि आज पंडाल खचाखच भरा रहता है। लोग सुनते हैं, आनंद लेते हैं।

और अगर ये सोचते कि लोग कथा सुनने आयेंगे कि नहीं आयेंगे, पता नहीं क्या होगा, क्या नहीं होगा, रहने दो। अगर वैसे करते तो कुछ भी नहीं होता। यह जो कुछ हो रहा है यह उनके प्रयासों का परिणाम है। इन्होंने प्रयास पर भरोसा किया तो परिणाम अच्छा आया। आप भी अपने प्रयासों पर विश्वास करें। दृढ़ता से भरोसा कीजिये अपने प्रयासों पर कि नहीं हमने संपर्क किया है, हमने सब युवाओं से बात की है, हम सबको मिलने गए हैं इसलिये जरूर सुनने लोग आयेंगे और आया परिणाम। देख लो बहुत प्यारी प्यारी समझदारी भरी बातें हुई हैं, कितना अच्छा संवाद हुआ है। जितनी देर बातें की उतनी देर आपने कितनी सावधानी से, ध्यान से बातें सुनी। इसके लिए आपको धन्यवाद देता हूं। प्रयासों पर आप ध्यान दो परिणाम अच्छा ही आएगा।

एक प्रश्न आया है कि पैसा आज के समय में संबंधों से भी महत्वपूर्ण हो गया है ऐसे में क्या किया जाए जिससे संबंध मधुर रहे?

ज्यादा संबंध मधुर रखना हो वहाँ पैसे बांट दो भैया। संबंध खूब मधुर हो जाएंगे। मैं इस प्रश्न के विषय में कुछ क्या कहूं भाई संबंधों की महत्वता, संबंधों का होना जरूरी है हमारे जिंदगी में यह तो भैया उन्हीं को समझ में आता है जिनके जीवन में त्याग है। कोई भी रिश्ता हो उसको निभाने के लिए उसको चलाने के लिए त्याग करना पड़ता है। हलवे को मीठा करने के लिए हिलाते रहो और चीनी डालते रहो मीठा होता रहेगा। यानी त्याग करते रहो, छोटी-छोटी बातों को सहते रहो। बहुत कुछ सहना पड़ेगा, त्याग करना पड़ेगा तब रिश्ते मधुर रहते हैं।

अगला प्रश्न आया है कि जितनी रूचि टीवी मोबाइल में है इतनी रूचि नाम स्मरण में कैसे हो?

किसी भी कार्य में रूचि उसको करने से होगी। रूचि नहीं है तो भी नाम स्मरण करते रहो, एक दिन रूचि हो जायेगी। बुखार में मिश्री खाते हैं तो एक बार कड़वी लगती है लेकिन फिर भी खाते रहो तो मीठी लगने लगेगी। अभी रूचि नहीं है और उसको छोड़ दोगे तो उसमें रूचि नहीं हो पायेगी। संतों के दर्शन करो, संग करो, सत साहित्य पढ़ो, नाम स्मरण से जिन्होंने भगवत प्राप्ति की उन भक्तों की जीवनी पढ़ो तो नाम स्मरण में रूचि हो जायेगी।

एक भाई का प्रश्न आया है कि आत्म सम्मान और आत्म प्रेम कितना महत्वपूर्ण है?

कभी-कभी अहंकार को हम आत्म सम्मान का नाम दे देते हैं- हमारा भी तो कुछ आत्म सम्मान है। माता-पिता ने डांट दिया तो मुंह फुला लिया, किसी ने समझाया भाई माता-पिता का बुरा नहीं मानते। कैसे नहीं अंकल, कभी भी बोल देते हैं 10 लोगों के बीच में पापा कहते है कि तू सुनता नहीं है। अंकल मेरा भी तो कुछ आत्म सम्मान है, हम भी तो किसी के मित्र हैं। हम भी तो कुछ हैं। लोग मेरे ऊपर कमेंट करेंगे, मुझसे यह सब सहन नहीं होता है।

इस प्रकार आप अहंकार को आत्म सम्मान का नाम दे देते हैं। आत्म सम्मान का मतलब क्या होता है? सावधानी से सुन लीजिए, यह अर्थ आपको दोबारा सुनने को मिलेगा कि नहीं मिलेगा मालूम नहीं।। आत्म शब्द हमारे भीतर विराजमान आत्मा से संबंधित है और आत्मा जो है वह गुरु तत्व से संबंध रखती है। हमारे भीतर पैदा होने वाली अच्छी बात को आदर देना यह आत्म सम्मान है। वास्तविक आत्म सम्मान

इसको कहते हैं। फालतु उसने मुझे कह दिया मेरा भी तो कुछ आत्म सम्मान है। मुझे कह दिया कि आप यहाँ नहीं वहाँ बैठो, यह कैसे कह सकते है? हमारा कोई आत्म सम्मान नहीं है क्या? आपकी आत्मा आपको हमेशा संकेत करती है कि आप यह न करें वह न करें। यह जो आप कर रहे हो यह गलत है। इस बात को आदर देना यह आत्म सम्मान है। आत्म प्रेम किसको कहते हैं सुनो- अपनी अच्छाइयों से प्रेम करना और उनको घटने नहीं देना बढ़ाते रहना यह आत्म प्रेम है।

एक जन का प्रश्न आया है कि सुंदर दिनचर्या के लिए मार्गदर्शन करें अपने जीवन में आध्यात्म की क्या आवश्यकता है?

आपमें अधिकतर विद्यार्थी हैं। विद्यार्थी जीवन की आदर्श दिनचर्या में जल्दी उठना, व्यायाम करना, पौष्टिक नाश्ता करना, पढ़ाई के लिए समय निकालना, स्कूल-कॉलेज जाना, गृहकार्य करना, खेलकूद या अन्य गतिविधियों में भाग लेना, परिवार के साथ समय बिताना और रात को समय पर सोना शामिल है। एक विद्यार्थी के लिए आदर्श दिनचर्या में निम्नलिखित बातें शामिल होनी चाहिए :-

सुबह 4 और 5 बजे के बीच उठना। इससे दिन की शुरुआत अच्छी होती है और पढ़ाई के लिए भी शांत वातावरण मिलता है। उठते ही निवृत होकर 15-20 मिनट का व्यायाम करें जो शरीर और दिमाग को तरोताजा रखता है। उसके बाद अध्ययन करने बैठ जाएं। 8 बजे पौष्टिक नाश्ता करें। फिर विद्यालय या महाविद्यालय जाने का समय हो गया हो तो नियमित रूप से और समय पर जाएं। दिन को और शाम को समय पर भोजन करें, प्रयास हो कि भोजन में कोई न कोई गोगव्य पदार्थ हो। शाम के समय एक घण्टा खेलकूद में लगावें। शाम के भोजन के बाद 2 घण्टे पढ़ाई करें। रात को 10.30 बजे तक सो जाएं। इन सबके लिये समय सारिणी बनावें और उसका दृढ़ता से पालन करें। हर 1 घण्टे बाद दिमाग को विश्राम दें। तनाव से बचने के लिए योग या ध्यान करना चाहिए। सकारात्मक रहना चाहिए और अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

अध्यात्म था तो आज अपनी मुलाकात हुई है, अपनी बातचीत हुई है। अध्यात्म का जीवन में बहुत महत्व है। यह हमें जीवन के अर्थ और उद्देश्य को समझने में मदद करता है, हमें आंतरिक शांति और खुशी प्रदान करता है और हमें अपने आसपास के संसार से जुड़ने में मदद करता है। अध्यात्म का अर्थ है स्वयं का अध्ययन या आत्मा का अध्ययन। यह हमें अपने भीतर की ओर मुड़ने और अपनी प्रकृति को समझने में मदद करता है। जब हम अपने आप को जानते हैं, तो हम अपने जीवन के उद्देश्य को समझ पाते हैं और अपने जीवन को सार्थक बना पाते हैं। अध्यात्म हमें आंतरिक शांति और खुशी प्रदान करता है। जब हम अपने आपको स्वीकार करते हैं और अपने जीवन के उद्देश्य को समझ पाते हैं, तो हम तनाव और चिंता से मुक्त हो जाते हैं। हम अपने जीवन में अधिक सकारात्मक और आशावादी दृष्टिकोण रखते हैं। जब हम अपने आपको जानते हैं, तो हम दूसरों को भी बेहतर तरीके से समझ पाते हैं। हम दूसरों के प्रति अधिक सहानुभूति और करुणा रखते हैं, दूसरों के प्रति न्याय कर पाते हैं।

एक युवा ने पूछा है कि युवाओं में गाली देनी की और मांस भक्षण की प्रवति बढ़ रही है। क्या यह सही है।

किसी के लिये भी ये दोनों सही नहीं है। गाली बोलने से नेगेटिव एनर्जी हमारे ऊपर हावी होती है। लगातार 10 दिन गाली बोलकर देखो, आपकी शक्ल गुण्डे जैसी हो जायेगी।

मांस बहुत गंदी चीज है। मनुष्य के शरीर की रचना भी मांसाहारी की नहीं है। अपने जीभ के स्वाद के लिये निर्दोष जीवों की हत्या करना महान पाप है। स्वास्थ्य के लिये भी मांस बहुत हानिकारक वस्तु है। किसी भी दृष्टि से मांस खाना सही नहीं है।

पूजा और भक्ति किसकी करें

(साधक संजीवनी से)

न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः ।
माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ।।

मायाके द्वारा जिनका ज्ञान हरा गया है, (वे) आसुर भावका आश्रय लेनेवाले (और) मनुष्यों में महान् नीच (तथा) पाप-कर्म करनेवाले मूढ़ मनुष्य मेरे शरण नहीं होते।

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ।।

हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ अर्जुन! पवित्र कर्म करनेवाले अर्थार्थी, आर्त, जिज्ञासु और ज्ञानी अर्थात् प्रेमी (ये) चार प्रकार के मनुष्य मेरा भजन करते हैं अर्थात् मेरे शरण होते हैं।

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः।।

उन चार भक्तोंमें मुझमें निरन्तर लगा हुआ अनन्य भक्तिवाला ज्ञानी अर्थात् प्रेमी भक्त श्रेष्ठ है, क्योंकि ज्ञानी भक्तको मैं अत्यन्त प्रिय हूँ और वह मुझे (अत्यन्त) प्रिय है।

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गति ।।

पहले कहे हुए सब-के-सब (चारों) ही भक्त बड़े उदार (श्रेष्ठ भाववाले) हैं। परन्तु ज्ञानी (प्रेमी) तो मेरा स्वरूप ही हैं (ऐसा मेरा) मत है। कारण कि वह मुझसे अभिन्न है (और) जिससे श्रेष्ठ दूसरी कोई गति नहीं है (ऐसे) मुझमें ही दृढ़ स्थित है।

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ।।

बहुत जन्मोंके अन्तिम जन्ममें अर्थात् मनुष्य जन्म में सब कुछ परमात्मा ही हैं इस प्रकार (जो) ज्ञानवान् मेरे शरण होता है वह महात्मा बहुत दुर्लभ है।

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञाना: प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ।।

उन-उन कामनाओंसे जिनका ज्ञान हरा गया है, (ऐसे मनुष्य) अपनी-अपनी प्रकृति अर्थात् स्वभावसे नियन्त्रित होकर उस-उस अर्थात् देवताओंके उन-उन नियमोंको धारण करते हुए अन्य देवताओंके शरण हो जाते हैं।

यो यो यां यां तनुं भक्तरू श्रद्धयार्चितुमिच्छति ।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ।।

जो-जो भक्त जिस-जिस देवताका श्रद्धापूर्वक पूजन करना चाहता है, उस-उस देवतामें ही मैं उसी श्रद्धाको दृढ़ कर देता हूं।

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान् ।।

उस (मेरे द्वारा दृढ़ की हुई) श्रद्धासे युक्त होकर वह मनुष्य उस देवताकी (सकाम-भावपूर्वक) उपासना करता है और उसकी वह कामना पूरी भी होती है, परन्तु वह कामना-पूर्ति मेरे द्वारा ही विहित की हुई होती है।

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ।।

परन्तु उन तुच्छ बुद्धि वाले मनुष्यों को उन देवताओं की आराधना का फल अन्तवाला (नाशवान) ही मिलता है। देवताओंका पूजन करनेवाले देवताओंको प्राप्त होते हैं (और) मेरे भक्त मुझे ही प्राप्त होते हैं।

(गीता अध्याय 7 श्लोक संख्या 15 से 23)

एक बार एक भक्त का फोन आया, मैंने सम्बोधन में हरिओम से उत्तर दिया। भक्त को लगा कि ये अपने गुरुभाई है। पूछा कि आपके गुरु कौन हैं? मैंने कहा- भगवान। उसने पूछा- कौनसे भगवान? मैंने कहा- सबसे बड़े वाले भगवान। वे हंसने लगे। गीता के उपरोक्त प्रकरण का आशय यही है कि आप अगर सबसे बड़े वाले भगवान को छोड़कर किसी की भी भक्ति करते हैं, तो समय आपको लगेगा।

परम् पुण्यशाली भक्तराज केवट

मांगी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना।।
चरन कमल रज कहुँ सबु कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई।।

भावार्थ-श्री राम ने केवट से नाव माँगी, पर वह लाता नहीं। वह कहने लगा- मैंने तुम्हारा मर्म (भेद)जान लिया। तुम्हारे चरण कमलोंकी धूल के लिए सब लोग कहते हैं कि वह मनुष्य बना देने वाली कोई जड़ी है।

छुअत सिला भइ नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई।।
तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई।।

भावार्थ-जिसके छूते ही पत्थर की शिला सुंदरी स्त्री हो गई (मेरी नाव तो काठ की है)। काठ पत्थर से कठोर तो होता नहीं। मेरी नाव भी मुनि की स्त्री हो जाएगी और इस प्रकार मेरी नाव उड़ जाएगी, मैं लुट जाऊँगा (और मेरी रोजी मारी जाएगी) (मेरी कमाने-खाने की राह ही मारी जाएगी)

एहिं प्रतिपालउँ सबु परिवारू। नहिं जानउँ कछु अउर कबारू।।
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू।।

भावार्थ-मैं तो इसी नाव से सारे परिवार का पालन-पोषण करता हूँ। दूसरा कोई धंधा नहीं जानता। हे प्रभु! यदि तुम अवश्य ही पार जाना चाहते हो तो मुझे पहले अपने चरणकमल पखारने (धो लेने)के लिए कह दो।

पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहि राम राउरि आन दसरथसपथ सब साची कहौं।
बरु तीर मारहुँ लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं।

भावार्थ-हे नाथ! मैं चरणकमल धोकर आपको नाव पर चढ़ा लूँगा, मैं आपसे कुछ उतराई नहीं चाहता। हे राम! मुझे आपकी दुहाई और दशरथजी की सौगंध है, मैं सब सच-सच कहता हूँ। लक्ष्मण भले ही मुझे तीर मारें, पर जब तक मैं पैरों को पखार न लूँगा, तब तक हे तुलसीदास के नाथ! हे कृपालु! मैं पार नहीं उतारूँगा।

सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करुनाऐन चितइ जानकी लखन तन

भावार्थ-केवट के प्रेम में लपेटे हुए अटपटे वचन सुनकर करुणाधाम श्री रामचन्द्रजी जानकीजी और लक्ष्मणजी की ओर देखकर हँसे।

कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई।।
बेगि आनु जलपाय पखारू। होत बिलंबु उतारहि पारू।।

भावार्थ-कृपा के समुद्र श्री रामचन्द्रजी केवट से मुस्कुराकर बोले भाई! तू वही कर जिससे तेरी नाव न जाए। जल्दी पानी ला और पैर धो ले। देर हो रही है, पार उतार दे।।

जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा।।
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा। जेहिं जगु किय तिहु पगहु ते थोरा।।

भावार्थ-एक बार जिनका नाम स्मरण करते ही मनुष्य अपार भवसागर के पार उतर जाते हैं और जिन्होंने (वामनावतार में) जगत को तीन पग से भी छोटा कर दिया था (दो ही पग में त्रिलोकी को नाप लिया था), वही कृपालु श्री रामचन्द्रजी (गंगाजी से पार उतारने के लिए) केवट का निहोरा कर रहे हैं!

पद नख निरखि देवसरि हरषी। सुनि प्रभु बचन मोहँ मति करषी।।

केवट राम रजायसु पावा। पानि कठवता भरि लेइ आवा।।

भावार्थ–प्रभु के इन वचनों को सुनकर गंगाजी की बुद्धि मोह से खिंच गई थी (कि ये साक्षात भगवान होकर भी पार उतारने के लिए केवट का निहोरा कैसे कर रहे हैं), परन्तु (समीप आने पर अपनी उत्पत्ति के स्थान) पदनखों को देखते ही (उन्हें पहचानकर) देवनदी गंगाजी हर्षित हो गई। (वे समझ गई कि भगवान नरलीला कर रहे हैं, इससे उनका मोह नष्ट हो गया और इन चरणों का स्पर्श प्राप्त करके मैं धन्य होऊँगी, यह विचारकर वे हर्षित हो गई।) केवट श्री रामचन्द्रजी की आज्ञा पाकर कठौते में भरकर जल ले आया।

अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा।।
बरषि सुमन सुर सकल सिहाहीं। एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं।।

भावार्थ–अत्यन्त आनंद और प्रेम में उमंगकर वह भगवान के चरणकमल धोने लगा। सब देवता फूल बरसाकर सिहाने लगे कि इसके समान पुण्य की राशि कोई नहीं है।

पद पखारि जलु पान करि आपु सहित परिवार।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेइ पार।।

भावार्थ–चरणोंको धोकर और परिवार सहित स्वयं उस जल (चरणोदक)को पीकर पहले (उस महान पुण्य के द्वारा) अपने पितरोंको भवसागरसे पारकर फिर आनंदपूर्वक प्रभु श्रीरामचन्द्रजी को गंगाजी के पार ले गया।

उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता। सीय रामुगुह लखन समेता।।
केवट उतरि दंडवत कीन्हा। प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा।।

भावार्थ–निषादराज और लक्ष्मणजी सहित श्री सीताजी और श्री रामचन्द्रजी (नाव से) उतरकर गंगाजी की रेत (बालू) में खड़े हो गए। तब केवट ने उतरकर दण्डवत की।(उसको दण्डवत करते देखकर) प्रभु को संकोच हुआ कि इसको कुछ दिया नहीं।

पिय हिय की सिय जाननिहारी। मनि मुदरी मन मुदित उतारी।
कहेउ कृपाल लेहि उतराई। केवट चरन गहे अकुलाई।।

भावार्थ–पति के हृदय की जानने वाली सीताजी ने आनंद भरे मन से अपनी रत्न जड़ित अँगूठी (अँगुली से) उतारी। कृपालु श्री रामचन्द्रजी ने केवट से कहा, नाव की उतराई लो। केवट ने व्याकुल होकर चरण पकड़ लिए।

नाथ आजु मैं काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावाम
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी। आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी

भावार्थ–(उसने कहा–) हे नाथ! आज मैंने क्या नहीं पाया! मेरे दोष, दुःख और दरिद्रता की आग आज बुझ गई है। मैंने बहुत समय तक मजदूरी की। विधाता ने आज बहुत अच्छी भरपूर मजदूरी दे दी।

अब कछु नाथ न चाहिअ मोरें। दीन दयाल अनुग्रह तोरें
फिरती बार मोहि जो देबा। सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा

भावार्थ–हे नाथ! हे दीनदयाल! आपकी कृपा से अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। लौटती बार आप मुझे जो कुछ देंगे, वह प्रसाद मैं सिर चढ़ाकर लूँगा।

बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहिं कछु केवटु लेइ।
बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल बरु देइ।।

भावार्थ– प्रभु श्री रामजी, लक्ष्मणजी और सीताजी ने बहुत आग्रह (या यत्न) किया, पर केवट कुछ नहीं लेता। तब करुणा के धाम भगवान श्री रामचन्द्रजी ने निर्मल भक्ति का वरदान देकर उसे विदा किया।

श्री भक्तमाल कथा

(पूज्य श्री मुकुन्दप्रकाश जी ब्रह्मचारी)

पिछले अंक से आगे...मूल गुजराती से हिन्दी रूपान्तरण

द्वारिकाधीश प्रभु की कृपा से ही यह सत्संग हो रहा है। भगवान द्वारिकाधीश की अनन्त कृपा है। आगे भी द्वारीकाधीश और पीछे भी द्वारीकाधीश और बीच में दास को सत्संग करने का अवसर मिल रहा है। भगवान की कृपा से इन पांच गोमाता की कृपा से इतना बड़ा यह आयोजन हुआ है।

ब्रज में कन्हैया को जब पूतना राक्षसी मां बन कर ले गई और भयंकर राक्षसी का रूप धारण किया तब कन्हैया ने उसके विषमय दूध का पान किया लेकिन ठाकुर जी को कुछ विष का क्या असर हो सकता है? भगवान के भक्तों को जब इसका कोई असर नहीं होता है, तो ठाकुर जी को तो क्या असर होगा उसका? भक्तिमति मीराबाई जब विष का प्याला पी गई हो और उस पर कोई असर नहीं हुआ तो ठाकुर जी पर इसका क्या असर हो सकता है।

दूध के साथ प्राण खींचकर ठाकुर जी ने पूतना का उद्धार किया। फिर जब पूतना का मृत शरीर धरती पर गिरा तो यशोदा मैया, नंदबाबा और सभी ग्वाल दौड़े-दौड़े गए। अरे मेरा कन्हैया, अरे मेरा कन्हैया! कन्हैया को मां यशोदा ने गोद में उठाया और गोमाता के गोष्ठ में लेकर गए कि हमारा लाला पूतना के स्पर्श से अपवित्र हो गया है, लाला को नजर लगी है, लाल की नजर उतनी पड़ेगी। ऐसे कह के यशोदा मैया ने लाला को गोबर गोमूत्र से शरीर मलमल कर नहलाया। यशोदा मैया ने गोमाता की पूंछ को लाला के ऊपर सात बार घूमाकर नजर उतारी। गोबर और गोमूत्र के स्नान से ठाकुर जी पवित्र होते हैं।

श्रीमद् भागवत में वर्णन आता है कि :-

गोमूत्रेण स्नापयित्वा पुनर्गोरजसार्भकम्।
रक्षां चक्रुश्च शकृता द्वादशाङ्गेषु नामभि।।

उन्होंने पहले बालक श्रीकृष्ण को गोमूत्र से स्नान कराया, फिर सब अंगों में गोरज लगाई और फिर बारह अंगों में गोबर लगाकर भगवान के केशव आदि नामों से रक्षा की। मंत्र बोल कर गोमाता की पूंछ कन्हैया के ऊपर से फेर कर उसकी रक्षा की गई इस प्रकार गोमाता के गोबर गोमूत्र से परात्पर परमात्मा भी पवित्र होते हैं तो समझो कितनी महिमा है गोमाता की। गोमाता में पशु दृष्टि नहीं रखें, गाय पशु नहीं गोमाता धरती का प्राण है और भगवान की प्रिय से प्रिय से प्रिय ब्रज में कोई है तो वह पूज्या गोमाता है। लोक गीत में गाया जाता है कि कन्हैया तुझे प्रिया क्या है तो वह कहता है मुरली। लेकिन वास्तव में यह सत्य नहीं है। सत्य यह है कि कन्हैया को पूरे ब्रह्मांड में प्रिय से प्रिय कोई है तो वह जगत जननी गोमाता है। कारण कि कन्हैया ने, गोपाल ने, अपने हाथों से गोमाता की सेवा की है। गोमाता की सेवा का कार्य अपने समय कन्हैया ने दूसरों को नहीं सौंपा, वे स्वयं नंगे पैर गायों के पीछे-पीछे फिरते थे। बाकी अनेकों कार्य कन्हैया ने भक्तों द्वारा करवाये, पर गोसेवा स्वयं ने की। अपनी गायों के लिये उन्होंने ग्वाल नहीं रखे।

भगवान कृष्ण का प्राकट्य गोमाता के लिये ही हुआ है। पूरे भारत के संत, कथा व्यास, व्यास पीठ पर बैठने वाले किसी भी सम्प्रदाय, किसी भी मत के लोगों को पूछें कि धरती पर भगवान के अवतार लेने का कारण क्या है तो उत्तर मिलेगा कि जब गाय, ब्राह्मण, साधु और देवताओं पर अत्याचार हो, धर्म का नाश होने लगे तब यह धरती गाय का रूप लेकर भगवान के पास जाती है और प्रार्थना करती है कि हे प्रभु! आप अवतार लेकर सबके कष्टों को दूर करो। ....शेष अगले अंक में

श्रीमद्भागवत कथा

(गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी महाराज)

.......पिछले अंक से आगे

.....नारद जी यह बताइये कि मां-बेटा जब साथ-साथ रहते हैं तो क्या माँ से पहले बेटे वृद्ध हो जाए? यह विपरीत्ता क्यों? मैं तो अभी जवान हूँ और मेरे दोनों बेटे बूढ़े हो गये? इसलिए आप कुछ करिए।

नारदजी बोले- हे भक्ति महारानी! आप मन में शांति रखें परमात्मा जो है ना वह सब कुछ ठीक करेगा।

हे भक्ति देवी! इस पृथ्वी पर भयंकर कलियुग तो तभी आ गया था जब परमात्मा ने इस पृथ्वी से अपने स्वधाम को गमन किए थे उसी दिन से यहाँ पर कलियुग ने अपना प्रभाव जमा लिया था और सारा सदाचार, शिष्टाचार सब कुछ नष्ट हो गया है। लोग माता-पिता की भी बात नहीं मानते, दूर वालों की तो छोड़िये। प्रणाम करना, सम्मान करना, यह सब लुप्त हो गया। पहले साष्टांग करते थे, फिर पंचांग में आए फिर दो हाथों से जो चरण छुआ, अब घुटनों तक प्रणाम हुआ, कुछ-कुछ लोग यहाँ कमर में छूकर के प्रणाम करते हैं। कुछ दिन बाद सिर पर हाथ रखकर प्रणाम करेंगे। प्रणाम की विधि बदलती जा रही है। तो क्यों बदल रही है? क्योंकि हमारे अंदर यह शिष्टाचार ही नहीं है।

हमने अपने माता और पिता का भी त्याग किया है। जैसे ही विवाह होता है तो पुत्र अलग हो जाता है। वर्तमान समय में यह कलियुग का प्रभाव है। जिसने हम लोगों को 9 महीने गर्भ में रखा, दूध पिलाया, विवाह लायक 20-25 साल के हुए तो विवाह किया और विवाह करते ही आप सबको भूल गये, जो सहधर्मिणी पत्नी आई उनसे मार्गदर्शन लेने लग गए। घूमने जाना है तो तकलीफ है। बूढ़े माता-पिता घर में है। उनको छोड़कर जा नहीं सकते। जो माता-पिता की सेवा करता है वही इस बात को जानता है। माँ की तरह कोई ख्याल रखे, यह केवल ख्याल हो सकता है वास्तविक नहीं हो सकता।

बनारस में मैं पढ़ता था तब धर्मसंघ में पढ़ने जाता था तो सामने ही एक वृद्धाश्रम था। एक दिन ऐसे ही वृद्धाश्रम में गया मेरी कोई रुचि नहीं थी उस समय और मैं ऐसी बातें ज्यादा समझता भी नहीं था। तो वहाँ एक माताजी बैठी-बैठी रो रही थी। मैंने पूछा माताजी क्यों रो रही हो? तो वह तो कुछ नहीं बोली परन्तु उनके साथ वाली जो माता थी वो बोली कि बेटा यह अभी नई-नई आई है। वह सामने वाला जो घर है वह इसके बेटे का घर है। उसमें वे छोटे-छोटे बच्चे जब दौड़ते हैं, खेलते-कूदते हैं तो उनको देख-देख करके रोती है। अब बताओ हम लोग अपने सुख के लिए उनको इतना दुःख दे रहे हैं। जो हमारे मूल का कारण है, हमारी उत्पत्ति का जो कारण है। हमारे जीवन का जो आधार है, उसको भी इतना दुःख दे रहे हैं। इसलिए देवी तुम चिंता मत करो यह कलियुग का प्रभाव है। कलियुग में ये सब होना ही है।

एक बात तो ठीक है कि आप वृंदावन प्राप्त करके युवा हो गई। यदि आप भी युवा नहीं होती तो क्या होता? परन्तु हे देवी! ज्ञान और वैराग्य के यहाँ पर ग्राहक नहीं है। कोई चीज बिकती है तो कब बिकती है? जब उसकी मार्केटिंग वैल्यू हो। हम लोगों को भोजन करना है तो सारा सामान हम खरीदकर लाते हैं। वहाँ दूकान पर देखते हैं कि जिस वस्तु की जरूरत होती है उसको ग्राहक मांगता है। जिसकी आवश्यकता नहीं होती है ऐसी वस्तुएं अगर दूकान पर है तो पड़ी रहेगी। कोई खरीदेगा नहीं। ज्ञान और वैराग्य के यहाँ ग्राहक नहीं है। इसलिए उनकी यह दशा है।

भक्ति बोली- यदि कलियुग इतना गंदा था तो रखा ही क्यों परीक्षित जी महाराज ने, उसे आने ही

क्यों दिया पृथ्वी पर?

नारदजी बोले- देवी इसमें खूब असुचिता, अपवित्रता, अत्याचार, दुराचार, आशिष्टाचार आदि सब कुछ बुराइयाँ हैं, परन्तु एक विशेषता जान करके उन्होंने रख लिया-

यत् फलं नास्ति तपसा न योगेन समाधिना।
तत् फलं लभते सम्यक् कलौ केशवकीर्तनात्।।

जो फल तपस्या, योग, और समाधि से नहीं प्राप्त होता, वही फल कलियुग में भगवान श्रीकृष्ण का कीर्तन-भजन करने से प्राप्त हो जाता है। स्कन्ध पुराण में लिखा है कि सतयुग में सतयुग की जितनी अवधि होती है उतने वर्ष तक तपस्या करे तोजो फल मिलता था, त्रेता में वही फल 5 लाख वर्ष तपस्या करने से मिल जाता था, द्वापर में वह फल 1 लाख वर्ष की तपस्या से मिल जाता था, वही फल कलियुग में केवल एक दिन भगवन्नाम स्मरण से मिल जाता है। इसलिए कलयुग में सब कुछ दुर्गुण होते हुए भी वह श्रेष्ठ है। क्यों? क्योंकि इसमें परमात्मा केवल भगवान के नाम स्मरण से ही संतुष्ट हो जाते हैं

इसलिये सतयुग, त्रेता और द्वापर के जो जीव हैं वे कलियुग में जन्म लेना चाहते हैं। कलियुग में जन्म लेकर के आना चाहते हैं। क्यों आना चाहते हैं? क्योंकि परमात्मा कलियुग में खूब सहज, है खूब सरल है, खूब सुलभ है।

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम् ।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा

हरि का नाम, हरि का नाम, हरि का नाम, बस केवल श्री हरि के नाम के अतिरिक्त कलियुग में कोई अन्य उपाय नहीं है, नहीं है नहीं है। इस कलिकाल में प्रभु के नाम के अतिरिक्त और कोई गति नहीं। हरे रामा हरे रामा राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। परमात्मा का जो नाम है वह नाम लेकर के कौन बचा है इस संसार में बताओ? परमात्मा का नाम लेने से कितने ही पापी, कितने ही पतित थे उन सबका उद्धार हो गया। हम लोग तो पापी वगैरह कुछ होंगे तो पता नहीं पर हम इतने संतों की शरण में आ गये हैं, इते समीप जो आगये हैं इसका मतलब यह है कि परमात्मा ने हमको बुलाया है। इस भारतवर्ष में कितनी जनता है, कितने जीव हैं परन्तु संतो से जुड़े हुए कितने लोग हैं? इसका मतलब परमात्मा ने हमारा वरण तो कर लिया है। अब जो कुछ भी कमी है वह हमारी ओर से कमी है। हमारा वरण कर लिया, संतों से जोड़ दिया, संत निरंतर हमको सही बात बताने लगे। अब हम कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं वह हमारी ईमानदारी पर है, हमारी कमी है।

भगवान का नाम स्मरण करने वाला व्यक्ति कभी पतित नहीं हो सकता। प्रहलाद जी अपने उपदेश में कहते हैं- अरे महाराज भूल से छींकते अथवा अवहेलना पूर्वक भी परमात्मा का नाम लिया जाए तब भी व्यर्थ नहीं होता है। अजामिल ने अपने पुत्र को वैसे ही पुकारा था। नारायण नाम से पुकारा तो भगवान के दूत आ गये और उसकी रक्षा भगवान ने की थी। इसलिए परमात्मा का नाम येनकेन प्रकारेन अपने मुख से उच्चारित होना चाहिए। वाल्मीकि जी राम-राम नहीं बोल पा रहे थे, मरा मरा रट रहे थे और मरा मरा से राम राम हो गया जिसके प्रभाव से उनका हृदय परिवर्तित हो गया और वे ब्रह्म के समान हो गये। वे डाकू से महान ऋषि बन गये और उन्होंने रामायण जैसे महाकाव्य की रचना कर डाली। हनुमान जी को देख लीजिए, श्री राम जय राम जय जय राम कहने से वे बंदर से कितने बड़े रामभक्त हो गये। पापी में जितना पाप करने की शक्ति नहीं है उतनी नाम में उसके उद्धार की शक्ति है।

यह कलियुग का प्रभाव है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मात्सर्य आदि जो दुर्गण है ये मनुष्य पर अपना प्रभाव क्यों जमा रहे हैं? क्योंकि हमने नाम की शरण नहीं ली। यह जो नाम है यह आधार है......

भज गोविंदम्
(गोविंद की स्तुति–प्रार्थना)

(श्रीमद् आदि शंकराचार्य द्वारा रचित)

श्रीमद् आदि शंकराचार्य द्वारा रचित संस्कृत में एक लोकप्रिय हिंदू भक्ति कविता है। जिसे **मोह मुदगर** यानि **भ्रम का नाश करने वाली** के नाम से भी जाना जाता है, यह इस दृष्टिकोण को रेखांकित करता है कि भक्ति, ज्ञान के साथ–साथ महत्वपूर्ण है, जैसा कि भक्ति आंदोलन द्वारा जोर दिया गया है।

इस भजन की रचना से जुड़ी एक किंवदंती है। ऐसा कहा जाता है कि आदि शंकराचार्य अपने शिष्यों के साथ एक दिन वाराणसी की एक सड़क पर घूम रहे थे, जब उनकी नजर एक बूढ़े विद्वान पर पड़ी जो सड़क पर पाणिनि के संस्कृत व्याकरण के नियमों को बार–बार दोहरा रहा था। उस पर दया करते हुए, आदि शंकराचार्य उस विद्वान के पास गए और उसे सलाह दी कि वह इस उम्र में व्याकरण पर अपना समय बर्बाद न करे, बल्कि अपना ध्यान भगवान की भक्ति और आराधना में लगाए, जो उसे जीवन और मृत्यु के इस दुष्चक्र से बचाएगा। कहा जाता है कि इस अवसर पर 'भज गोविंदम' की रचना की गई थी।

यह रचना याद दिलाती है कि आदि शंकराचार्य, जिन्हें अक्सर मोक्ष प्राप्त करने के लिए ज्ञान मार्ग, या ज्ञान का मार्ग का पुनरुद्धारकर्ता माना जाता है, उसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भक्ति मार्ग के भी समर्थक थे। जैसा कि सी. राजगोपालाचारी ने अपनी टिप्पणी में लिखा है, जब बुद्धि (ज्ञान) परिपक्व हो जाती है और हृदय में सुरक्षित रूप से बस जाती है, तो यह ज्ञान (विज्ञान) बन जाती है। जब वह ज्ञान (विज्ञान) जीवन के साथ एकीकृत हो जाता है और कार्रवाई में सामने आता है, तो यह भक्ति बन जाती है। ज्ञान जो परिपक्व हो गया है उसे भक्ति कहा जाता है। अगर यह भक्ति में परिवर्तित नहीं होता है, तो ऐसा ज्ञान (ज्ञान) बेकार चमकीला है।

इस प्रार्थना में आदि शंकराचार्य ने आध यात्मिक विकास और जन्म–मृत्यु के चक्र से मुक्ति के साधन के रूप में ईश्वर के प्रति भक्ति के महत्व पर जोर दिया है। कई विद्वानों का मानना है कि यह रचना संक्षिप्तता और सरलता दोनों के साथ उन सभी वेदान्तिक विचारों का सार प्रस्तुत करती है जो श्रीमद आदि शंकराचार्य द्वारा लिखी गई अन्य रचनाओं में पाए जाते हैं। इस प्रार्थना में कुल 33 पद है जिनको अर्थ सहित देने का प्रयास किया जायेगा।

भज गोविन्दम्, भज गोविन्दम्
गोविन्दं भज मूढ़मते।
संप्राप्ते सन्निहिते काले,
न हि न हि रक्षति डुकृञ् करणे। (1)

हे मूर्ख! गोविंद को भजो! गोविन्द को भजो! गोविन्द को भजो! क्योंकि मृत्यु के समय व्याकरण के नियम याद रखने से आपकी रक्षा नहीं हो सकती है।

मूढ़ जहीहि धनागमतृष्णाम्
कुरु सद्बुद्धिमं मनसि वितृष्णाम्
यल्लभसे निजकर्मोपात्तम्
वित्तं तेन विनोदय चित्तं। (2)

हे मूर्ख! धन एकत्र करने के लोभ को त्यागो। अपने मन से इन समस्त कामनाओं का त्याग करो। सत्यता के पथ का अनुसरण करो, अपने परिश्रम से जो धन प्राप्त हो उससे ही अपने मन को प्रसन्न रखो।...........शेष अगले अंक में

हर मंदिर हो गोशाला

(अम्बा लाल सुथार, सम्पादक)

भारत में केवल हिन्दू मंदिरों पर ही सरकारी प्रशासनिक नियंत्रण है, अन्य धर्मों/मतों/सम्प्रदायों के धार्मिक स्थलों को सरकारी नियंत्रण से मुक्त रखा गया है। हिन्दूओं के बड़े मंदिरों में भक्तों द्वारा भगवान के लिये, उनके अपने इष्ट के लिये जो भेंट पूजा दी जाती है उनका बड़ा हिस्सा उस राज्य की सरकार द्वारा ले लिया जाता है, हिन्दू संगठनों द्वारा ऐसे आरोप बार-बार लगाये जाते रहे हैं, जबकि अन्य धर्मों/मतों/सम्प्रदायों के धार्मिक स्थलों का संचालन वे स्वयं करते हैं और उनको जो भी आय प्राप्त होती है उसे वे अपने धर्म के प्रचार-प्रसार में, अपने धार्मिक स्थलों के रख रखाव में अपनी इच्छानुसार व्यय करते हैं। कई बार तो कुछ राज्यों की सरकारों पर ये आरोप भी लगे कि मंदिरों से प्राप्त आय को सरकार ने हज यात्रा और मदरसों पर खर्च की।

इस प्रकार की बातें जब बार-बार उठती है तो इसमें कुछ तो सच्चाई होगी ही। धर्मनिरपेक्ष कहे जाने वाले एक लोकतांत्रिक देश में हिन्दुओं के साथ समानता का व्यवहार नहीं किया जा रहा है। यह हिन्दू धार्मिक संस्थानों, मंदिरों के आर्थिक अधिकारों का हनन है। हिन्दू मंदिर केवल पूजा स्थल ही नहीं है, वे भारतीय संस्कृति और भारतीय परम्पराओं और सेवा के मूल स्थान है।

थोड़ा विचार करें, आप भगवान के मंदिर में जब भी दान देते हैं तो क्या सोचकर देते हैं? यही कि हमारा दिया दान धर्म और पुण्य में लगेगा। लेकिन यह पूर्ण सत्य नहीं है। क्योंकि जिन मंदिरों पर सरकार का नियंत्रण है वो दान से प्राप्त राशि को अपनी नीति अनुसार व्यय करेगी, मंदिर की संचालन समिति दान से प्राप्त सारी सम्पत्ति को अपनी इच्छानुसार व्यय नहीं कर सकती। इसमें से जो राशि सरकारी खजाने में जाती है, सरकारों का कहना है कि उसे वो लोक कल्याणकारी योजनाओं पर लगाती है। लेकिन क्या मंदिर में दान देने वाले भक्त लोक कल्याणकारी योजनाओं के लिये दान देते हैं? अगर ऐसा है तो वे मंदिर की बजाय मुख्यमंत्री राहत कोष में क्यों नहीं दे देते। सरकार अपने सभी सरकारी कार्यालयों में दानपात्र स्थापित कर दे फिर देखें वहाँ कितना दान आता है लोक कल्याणकारी योजनाओं के लिये?

मंदिर की समितियाँ को भी देखें तो उनके द्वारा मंदिर में आने वाले दान में से कितना दान धर्म के उत्थान के लिये लगाया जाता है? कई मंदिर तो ऐसे हैं जिन पर पुजारियों के परिवार विशेष का पूर्ण आधिपत्य होता है। वे मंदिर की अधिकतम आय अपनी निजी मानते हैं। उस पुजारी के घर के आगे दानपात्र लगा दें, देखते हैं कितना दान लोग देते हैं उसे?

कुल मिलाकर यह बात स्पष्ट है कि मंदिर में भक्त जो भी दान देते हैं वे अपने इष्ट को दे रहे हैं, धर्म के लिये दे रहे हैं। विचार करो, हमारे हिन्दू धर्म का आधार स्तम्भ क्या है? गाय ही हिन्दू धर्म का आधार स्तम्भ है। जो गाय में श्रद्धा रखता हो वो ही हिन्दू है। धर्म के लिये जो भी आय होती है, उस मंदिर के साधारण व्ययों को घटाकर शेष सभी भगवान की स्वयं की निजी आय है, उसको छूना भी पाप है, क्योंकि भक्तों ने ईश्वर को प्रदान की है। गोमाता हमारे इष्ट की भी इष्ट है। जब श्री कृष्ण स्वयं यहाँ अवतार लेकर विराज रहे थे तो वे अपना सब कुछ गोसेवा में लगाते थे। उन अवतारों के स्थान पर हम मंदिर में भगवान को मानने लगे। तो मंदिर की आय भगवान की आय, भगवान की इष्ट गोमाता की हुई या नहीं?

हिन्दुओं को चाहिये कि वे ईमानदारी का परिचय दे और मंदिर-मंदिर गोशाला संचालित करें, धर्म के नाम पर प्राप्त आय गोमाता को समर्पित करे।

श्री कामधेनु गो अभयारण्य सालरिया (म.प्र.) को राज्य स्तर पर श्रेष्ठ गोसेवा के लिये मिला प्रथम पुरस्कार, मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने 5 लाख रुपये की राशि और प्रशस्ति पत्र देकर किया सम्मानित

परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराज जी के पावन सानिध्य में मध्य प्रदेश में न्यास द्वारा संचालित श्री कामधेनु गो अभयारण्य सालरिया को श्रेष्ठ गोसेवा के लिये भोपाल में 20 जून को मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव द्वारा अपने आवास पर आयोजित गोशालाओं के राज्य स्तरीय सम्मेलन में वर्ष 2023-24 के लिये आचार्य श्री विद्यासागर जीवदया (गोसेवा) प्रथम पुरस्कार 5 लाख रुपये की राशि और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। न्यास की ओर से पुरस्कार प्राप्त करने हेतु वरिष्ठ गोभक्त श्री चिमनभाई अग्रवाल अहमदाबाद, श्री अम्बा लाल सुथार केन्द्रीय निर्देशक न्यास, श्री आलोक सिंघल मुख्य प्रशासनिक अधिकारी न्यास, श्री विक्रमसिंह परिहार प्रबंध न्यासी गो अभयारण्य व श्री शिवराज शर्मा प्रबंधक गो अभ्यारण्य उपस्थित रहे।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने राज्य की गोशालाओं को प्रति गोवंश प्रतिदिन 40 रुपये की पूर्व घोषणा अनुसार राशि सिंघल क्लिक से जारी की और घोषणा की कि प्रति माह इसी प्रकार से गोशालाओं के खाते में एक क्लिक से सीधे ही राशि हस्तांतरित होती रहेगी।

न्यासी बोर्ड की बैठक आयोजित

परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराज जी के पावन सानिध्य एवं पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज की अध्यक्षता में दिनांक 5 जून को अभिनव ब्रज मण्डल नंदगांव में न्यासी बोर्ड की द्विमासिक बैठक आयोजित हुई। इस बैठक में आगामी चतुर्मास की तैयारियों पर चर्चा के साथ सुरभि विश्वविद्यालय की स्थापना के लिये आवश्यक कार्यवाही करने के अलावा सुरभि प्रज्ञा परिषद की आगामी बैठक 16 अगस्त को अभिनव ब्रज मण्डल नंदगांव में तथा केन्द्रीय कार्यकारिणी की आगामी बैठक 23 जून को नंदगांव में ही आयोजित करने का निर्णय लिया गया। इसके अलावा और भी कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

न्यास की केन्द्रीय कार्यकारिणी की बैठक आयोजित

परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराज जी के पावन सानिध्य एवं पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज की मंगल उपस्थिति में 23 जून को अभिनव ब्रज मण्डल नंदगांव में न्यास की केन्द्रीय कार्यकारिणी की त्रैमासिक बैठक आयोजित हुई। इस बैठक में आगामी चतुर्मास की तैयारियों, न्यास के लिये विदेशी नागरिकों से गोग्रास प्राप्त करने हेतु FCRA में रजिस्ट्रेशन, गोग्रास की भामाशाहों में बकाया राशि प्राप्ति हेतु निवेदन करने के साथ सुरभि विश्वविद्यालय की स्थापना के लिये आवश्यक कार्यवाही करने के निर्णय लिये गये। घी के वर्तमान भाव 1200 से बढ़ाकर 1320 प्रति लीटर करने का भी निर्णय लिया गया।

इस अवसर पर परम श्रद्धेय गोऋषि जी महाराज ने कार्यकारिणी सदस्यों और पदाधिकारियों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि:-

1. सभी सदस्य और पदाधिकारी अपने-अपने दायित्व को स्वीकार करें और निभाएं।
2. केन्द्रीय कार्यकारिणी न्यास द्वारा लक्षित उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु सामूहिक प्रयास करें।
3. स्वयं और अपने घर को गोव्रती बनावें।
4. गो गोवर्धन चातुर्मास में अधिक से अधिक श्रद्धालु गोभक्तों को यहाँ लाने का प्रयास करें।
5. गोसेवा, गोमाता पर दया करने के लिये नहीं है, गोमाता का वात्सल्य और करूणा प्राप्त करने के लिये है।

पूज्य गोवत्स राधाकृष्णजी महाराज ने अपने आशीर्वचन में कहा कि यह श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन पथमेड़ा और अभिनव व्रज मण्डल श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नंदगाँव की भूमियों पर ऋषि/देवीय सत्ता है जिसने परम् श्रद्धेय गोऋषि जी महाराज को आकर्षित किया है और उसी सत्ता ने हमें भी इस गोसेवा महाभियान में जोड़ा है। मन में यह विश्वास रखना चाहिये कि यह गोसेवा का कार्य ऋषि सत्ता का कार्य है और यह कार्य हमें ठाकुरजी ने दिया है तो कार्य तो होना ही है, बस हमको ईमानदारी से उनके द्वारा दिये गये कार्य को करना है। कार्य तो ठाकुरजी का है तो होगा ही, हम नहीं करेंगे तो अयोग्य समझे जाकर इस अभियान से बाहर कर दिये जायेंगे। हम इस भ्रम में न रहें कि मेरे बिना कार्य हो नहीं सकता। यह कार्य ठाकुरजी किसी दूसरे से भी करवा सकते हैं।

हमारे कार्य रूपी पर्ची पर ऋषियों की मोहर लगी हुई है, इसे लेकर कहीं भी जायेंगे तो कार्य तो होना ही है जैसे राजा की मोहर लगी पर्ची लेकर कोई किसी भी दूकानदार के पास जायेगा तो उसको कोई मना नहीं करेगा।

यह गोमाता का कार्य है, आगे बढ़कर हमें करना है। यह सब कार्य दिव्य शक्ति कर रही है, ऐसा मानकर हमको अपने कर्तव्यों से प्रमाद नहीं करना है। वह दिव्य शक्ति चाहती है कि काम मैं करूं और यश आपको मिले। यश लेने के लिये थोड़े सक्रिय हो जाओ।

श्री कामधेनु गो अभयारण्य सालरिया के जिला स्तरीय संचालक मण्डल की बैठक आयोजित

परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराज जी की पावन सन्निधि में मध्य प्रदेश के आगर मालवा जिले में न्यास द्वारा संचालित श्री कामधेनु गो अभयारण्य सालरिया में जिला कलेक्टर आगर मालवा की अध्यक्षता में दिनांक 28 जून को जिला स्तरीय संचालक मण्डल की त्रैमासिक बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिला स्तरीय विभागों के अधिकारी तथा न्यास के प्रतिनिधि के रूप में श्री अम्बा लाल सुथार, श्री विक्रमसिंह परिहार व श्री शिवराज शर्मा उपस्थित रहे।

बैठक में ननोरा ग्राम से गो अभयारण्य तक पकक्की सड़क बनाने, कुण्डालिया बांध से पानी उपलब्ध करवाने, सजीवन लाईफ कम्पनी राजकोट द्वारा गो अभयारण्य में वृक्षारोपण, हेतु अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी करने, 5 हजार गोवंश के लिये नये आवास निर्माण, गो अभयारण्य को उपलब्ध करवाये गये वाहनों के कागजात और बीमा, धन्वन्तरि में शल्य चिकित्सा हेतु टूलकिट उपलब्ध करवाने, पुराने तालाब-एनीकेट की मरम्मत करवाने आदि विषयों पर चर्चा हुई।

जिला कलेक्टर द्वारा निर्देश दिये गये कि शासन की अनुमति के बिना गो अभयारण्य में एक भी गोवंश को प्रवेश नहीं दोगे। बीमार गोवंश आता है वो भी हमारी जानकारी में होना चाहिये।

श्री गोधाम पथमेड़ा में हरियालो राज. अभियान के तहत लगाये पौधे

परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराज जी की पावन प्रेरणा से दिनांक 26 जून को गोसेवा मुख्यालय श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन पथमेड़ा में पर्यावरण संरक्षण के तहत हरियालो राजस्थान अभियान के तहत पौधारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की विभिन्न शाखाओं में इस वर्ष 1 लाख से अधिक वृक्ष लगाने का लक्ष्य रखा गया है। जिसमें अभिनव ब्रजमण्डल नंदगांव में 50 हजार, श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की विभिन्न शाखाओं में 20 हजार तथा श्री कामधेनु गो अभयारण्य सालरिया मध्य प्रदेश में 30 हजार वृक्ष लगाने का लक्ष्य रखा गया है। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की स्थापना से अब तक संस्था की विभिन्न गोशालाओं और कार्यालयों में कुल 10 लाख से अधिक वृक्ष लगाए जा चुके हैं।

उक्त कार्यक्रम में पूज्य महंत दुगवा श्री नेमीनाथ जी, पूज्य महंत हाड़ेचा श्री कैलाशपुरी जी, पूज्य महंत गोलासन श्री पूनमपुरीजी, पूज्य संत गोशरण श्री नंदरामदास जी महाराज, पूज्य संत श्री बलदेवदास जी महाराज, गोवत्स श्री विट्ठल कृष्ण जी, पूज्य श्री अनोप गिरीजी धमाणा, पूज्य श्री भारतनाथजी कमालपुरा, राव सा श्री मोहनसिंहजी चितलवाना, श्री आवड़ादान जी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सांचौर, श्री प्रमोद कुमार जी उपखंड अधिकारी सांचौर, श्री अशोक कुमार जी द्विवेदी उपमहाप्रबंधक इंडियन ऑयल कॅरपोरेशन जोधपुर, वन विभाग, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के स्थानीय अधिकारी, सरपंच मेडा और हाड़ेतर, एवं सैंकड़ों गोभक्त कार्यकर्ता उपस्थित रहे। इण्डियन ऑयल कॉरपोरेशन जोधपुर द्वारा 60 ट्री गार्ड और निःशुल्क पौधे उपलब्ध करवाये गये।

युवओं के चरित्र निर्माण शिविरों का हुआ आयोजन

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा युवाओं और विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण एवं जीवन विकास शिविर आयोजित किये गये। 25 मई से 3 जून तक श्री अभिनव व्रजमण्डल नंदगांव में गोवत्स ऋषिकुमार जीवन विकास शिविर, 11 जून से 16 जून तक गोवत्सा ऋषि कुमारियों के लिये जीवन संस्कार शिविर तथा श्री कामधेनु गो अभयारण्य सालरिया म.प्र. में 7 जून से 17 जून तक 12 वी कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिये व्यक्तितत्व विकास शिविर आयोजित हुए जिसमें युवक-युवतियों को उच्च जीवन चरित्र का निर्माण करते हुए गोसेवा और राष्ट्र सेवा की प्रेरणा दी गई। गो अभयारण्य में आयोजति शिविर में सूर्या फाउण्डेशन दिल्ली का सहयोग रहा।

भाव भरा आमंत्रण

पधारिये, आपके अपने अभिनव व्रज मण्डल श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नंदगाँव में 10 जुलाई से 06 सितम्बर 2025 तक परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराज की पावन सन्निधि में गो गोवर्धन कृपा चातुर्मास आराधना महोत्सव आयोजित होने जा रहा है। अतः पूज्य संत महात्मा एवं श्रद्धालु भाई बहनों से सादर सप्रेम अनुरोध है कि इस दिव्य आयोजन में सपरिवार व ईष्ट मित्रों सहित पधारकर धार्मिक एवं आध्यात्मिक लाभ लीजिये।

हिन्दी मासिक पत्रिका ''कामधेनु कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा'' के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार, मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

वेदलक्षणा
श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा
सात्विक आहार - शुद्ध विचार

#7300044444

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा का

पंचगव्य आधारित मानव मात्र के लिये अनुपम उपहार

वेदलक्षणा वैदिक गोतीर्थ

कोरोना और श्वास रोगों के बचाव में उपयोगी महौषधि

(डॉ. श्यामसिंह राजपुरोहित)

कोरोना काल का पिछला अनुभव बहुत डरावना रहा है। रोग का पता लगता तब तक मृत्यु नजदीक दिखाई देने लग जाती थी। इतना भय पहले कभी देखा नहीं गया था। इस कोरोना काल के संकेत अब फिर से मिलने लग गये हैं।

कोरोना वायरस संक्रमण द्वारा तेज गति से फैलने वाली व्याधि है। इसका प्रभाव श्वसन स्थान के फेफड़ों पर पड़ता है। इसके दुष्प्रभाव से फेफड़े कमजोर एवं ठोस होने लगते हैं। जिस कारण से सांस लेने में कठिनाई होने लगती है। कभी–कभी इसका विकृत रूप खून के अंदर थक्का जमाने में भी सक्षम हो जाता है जो ज्यादा घातक होता है।

यह रूप ज्यादातर मौसम की संधिकाल में जब ऋतु परिवर्तन होती है तब होता है। यह अधिकतर उन लोगों को प्रभावित करता है जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है, शारीरिक व्यायाम कम करते हैं या नहीं करते हैं, जिनकी खुराक सात्विक नहीं होती है और जिनके भोजन में गोमाता का दूध, दही, घी नहीं होता है। ऐसी भयानक बीमारी में गोमूत्र के साथ लॉन्ग, जायफल और जावित्री के द्वारा बना हुआ श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा का गोतीर्थ बहुत उपयोगी सिद्ध होता है।

गोतीर्थ फेफड़ों को मजबूती प्रदान करता है, फेफड़ों में चिपके हुए कफ को गला कर बाहर निकाल देता है, फेफड़ों को ठोस नहीं होने देता है और खून को भी पतला रखता है। गोमूत्र में विष को शमन करने की अद्‌भुत क्षमता होती है।

इस समय कोरोना संक्रमण से बचने के उपाय भी करने चाहिए और ऐसे रोगियों से दूर रहना चाहिए। खुराक अच्छी रखनी चाहिए। तभी इस रोग का प्रभाव कम होता है और जल्दी ही ठीक हो जाता है।

यह औषधि सर्दी–जुकाम व खांसी में भी बहुत ही प्रभावशाली और अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई है।

www.vedlakshana.com

कुल पृष्ठ- 36
जुलाई 2025

प्रकाशन तिथी : 01 जुलाई 2025
कामधेनु कल्याण 20 रुपए

RNI Reg- No - RAJHIN/2022/17167
Postal Reg No : RJ/SRO/9681/2025-2027

गोसेवार्थ सहयोग के प्रकार

1. एक गोमाता को गोद लेकर परिवार का सदस्य बनायें प्रतिवर्ष	रु 21000
2. आओ हरा घास चारा अर्पित करें प्रति गाड़ी	रु 31000
3. आइये सूखे घास चारे की सेवा करें प्रति गाड़ी	रु 1,01,000
4. गोमाता की सेवा में अक्षय भूदान समर्पित करें प्रति बीघा	रु 2,51,000
5. जीवन के साथ भी–जीवन के बाद भी आजीवन गोसेवक बनें प्रति गोवंश	रु 2,51,000
6. गुड़ की एक गाड़ी गोमाता को परोसें सेवा राशि	रु 4,51,000
7. अशक्त गोवंश हेतु पौष्टिक आहार की प्रति गाड़ी सेवा राशि	रु 5,00,000
8. बीमार गोवंश का उपचार करें मासिक सेवा राशि	रु 11,00,000
9. गोधाम द्वारा सेवित गोवंश सेवार्थ एक दिन का पौष्टिक आहार, हरा–सूखा घास चारा अर्पित करें सेवा राशि	रु 35,00,000

NAME - SHRI GODHAM MAHATEERTH PATHMEDA LOK PUNYARTH NYAS
BANK OF BARODA A/C - 08490100023827 | IFSC - BARB0ASHRAM (FIFTH CHARACTOR IS ZERO)
Branch : Ashram Road, Ahmedabad, Mob: 77420 93179, 76650 59999, 70730 00151

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क : 2100 रुपये मात्र
मूल्य : 20 रुपये